रजिस्ट्री सं. डीएल(एन)-04/0007/2003—05 REGISTERED No. DL(N)-04/0007/2003—05

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

साप्ताहिक/Weekly

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं॰ 46] नई दिल्ली, शनिवार, नवम्बर 13—नवम्बर 19, 2004 (कार्तिक 22, 1926)

No. 46] NEW DELHI, SATURDAY, NOVEMBER 13—NOVEMBER 19, 2004 (KARTIKA 22, 1926)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड-1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	895
भाग I—खण्ड-2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	1125
भाग I—खण्ड-3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	3
भाग I—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	1555
भाग II—खण्ड-1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खण्ड-1क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खण्ड-2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II—खण्ड-3—उप खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खण्ड-4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग III—खण्ड-1—उच्च न्यायालयों, निर्देशक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	1253
भाग III—खण्ड-2—पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस	8241
भाग III—खण्ड-3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	*
भाग III—खण्ड-4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	6419
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस	595
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक	*

*आंकड़े प्राप्त नहीं हैं।

CONTENTS

	Page
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court.	895
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	1185
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Ordersissued by the Ministry of Defence	3
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	1555
PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi languages of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules including Orders, Bye-laws, etc. of general character issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	1253
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	8241
PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	*
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	6419
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	595
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi	*

भाग I—खण्ड 1
[PART I—SECTION 1]

[रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विविधतर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त 2004

संख्या 127–प्रेज/2004 – राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनके असाधारण वीरतापूर्ण कार्यों के लिए "कीर्ति चक्र" प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते है:–

1. **श्री नरेंद्र नाथ धर दुबे, सैकेंड-इन-कमांड**
सीमा सुरक्षा बल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 30 अगस्त, 2003)

एक कट्टर आतंकवादी राणा ताहिर नदीम उर्फ गाजी बाबा, जो ई-ई-एम के चीफ आपरेशनल कमांडर के नूरबाग (श्रीनगर) के एक घर में उपस्थित होने की विशिष्ट सूचना के आधार पर सीमा सुरक्षा बल ने 30 अगस्त, 2003 को एक तलाशी एवं घेराबन्दी आपरेशन शुरू किया। अन्य अफसरों/कार्मिकों के साथ श्री नरेंद्र नाथ धर दुबे उस घर के दरवाजे को तोड़ कर अन्दर घुसे। घर के भूतल तथा प्रथम तल की तलाशी ली गई। घर के द्वितीय तल में पहुंचने पर उसे खाली पाया गया। फिर भी, श्री दुबे कमरे में विचित्र ढंग से रखी दो अलमारियों को देखकर सकते में आ गए। उन्होंने कार्मिकों की आड़ लेकर अलमारी पर लगे दर्पण को तोड़ने का अनुदेश दिया। दर्पण के टूटने पर, एक चोर दरवाजा खुला तथा इसमें छिपे आतंकवादियों ने भारी गोलीबारी शुरू कर दी तथा हथगोले फेंके। कांस्टेबल बलबीर सिंह सहित श्री दुबे गोलियों से घायल हो गए। घायल होने के बावजूद, दोनों ने जवाबी गोलाबारी की। एक आतंकवादी छिपने के ठिकाने से बाहर कूदा तथा बिल्कुल नजदीक से श्री दुबे पर गोली चलाने वाला था कि अपनी जिन्दगी की परवाह किए बिना कांस्टेबल बलबीर सिंह अफसर के समाने कूद गए। कांस्टेबल बलवीर सिंह के पेट में गोलियां लगी तथा घावों के कारण वे मौके पर ही वीरगति को प्राप्त हो गए। श्री दुबे झपट कर आतंकवादी पर टूट पड़े तथा उसकी राइफल पकड़ ली। आतंकवादी ने एक पिस्तौल निकाली तथा गोली चलाकर श्री दुबे के बाजू के अग्रभाग के चीथड़े कर दिए तथा बाहर की ओर दौड़ा। गंभीर रूप से घायल होने तथा अत्यधिक रक्तस्राव के बावजूद श्री दुबे आतंकवादी के पीछे दौड़े और उसको मौके पर ही मार डाला। बाद में मृतक आतंकवादी की पहचान कुख्यात राणा ताहिर नदीम उर्फ गाजी बाबा के रूप में पहचान हुई। अपने शरीर पर गोलियों के आठ जख्म होने तथा गंभीर रूप से जख्मी बाजू के बावजूद सुरक्षित स्थान पर पहुंचाए जाते समय भी श्री दुबे ने शेष आतंकवादियों के साथ जारी लड़ाई के सफल संचालन हेतु अपने अफसरों तथा आदमियों का मार्गदर्शन किया तथा उन्हें प्रेरित किया। आगे की कार्रवाई में एक और आतंकवादी भी मारा गया।

अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना श्री नरेंद्र नाथ धर दुबे ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में उत्कृष्ट वीरतापूर्ण कार्रवाई, अडिग साहस, सफल नेतृत्व के गुण, अनुकरणीय कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया।

2. **आईसी-62214 लेफ्टिनेंट कनवदीप सिंह**
10 सिख (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 23 सितम्बर, 2003)

एक प्लाटून के साथ लेफ्टिनेंट कनवदीप सिंह को जम्मू-कश्मीर के गुरेज सेक्टर में तलाशी तथा सफाया आपरेशन का कार्य सौंपा गया था। 23 सितम्बर, 2003 को लद्दाख स्काउट के एक गश्ती दल पर आतंकवादियों ने छिपकर आक्रमण कर दिया; दो सैनिक घायल हो गए जबकि अन्य सैनिक भारी गोलीबारी में फंस गए।

लेफ्टिनेंट कनवदीप ने स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए तथा किसी आदेश की प्रतीक्षा किए बिना फंसे हुए गश्ती दल को बचाने के लिए तुरंत अपनी प्लाटून को लगा दिया। ज्यों ही उनकी प्लाटून निकट आई तो दुर्गम प्राकृतिक गुफा में छुपे आतंकवादियों के दूसरे दल ने उन पर भारी गोलीबारी कर दी। व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना इस अफसर ने आड़ लेकर एक आतंकवादी को मार डाला। इसी बीच उन्होंने देखा कि आतंकवादियों की भारी गोलीबारी के कारण उनकी रॉकेट लांचर टुकड़ी फायर नहीं कर पा रही थी। यह अफसर अपनी टुकड़ी की ओर आगे बढ़े किंतु आतंकवादियों की गोलीबारी से घायल हो गए। घायल होने के बावजूद, यह अफसर रेंगकर अपनी टुकड़ी की तरफ आगे बढ़े और नजदीक की लड़ाई में रॉकेट लांचर दागकर एक अन्य आतंकवादी को मार डाला तथा तीसरे को घायल कर दिया। घावों से अत्यधिक रक्तस्राव के कारण यह अफसर वीरगति को प्राप्त हो गए।

लेफ्टिनेंट कनवदीप सिंह ने आतंकवादियों से लड़ाई में उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस और नेतृत्व का प्रदर्शन किया तथा भारतीय सेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप बलिदान दिया।

3. **आईसी-62671 लेफ्टिनेंट धीरेन्द्र सिंह अत्री**
ए एस सी, 3 राजपूत (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 अक्तूबर, 2003)

लेफ्टिनेंट धीरेन्द्र सिंह अत्री ने जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में एक घुसपैठ के रास्ते पर एम्बुश लगाया। 18 अक्तूबर, 2003 को 0230 बजे एम्बुश पार्टी ने आतंकवादियों की संदिग्ध गतिविधियां देख गोलीबारी की। सुबह के प्रथम पहर में लेफ्टिनेंट अत्री ने घने जंगलों की तलाशी का नेतृत्व किया। एक नाले में छिपे आतंकवादियों ने उनकी पार्टी पर गोलीबारी कर दी। लेफ्टिनेंट अत्री की भीषण जवाबी गोलीबारी से न केवल दो आतंकवादियों को मारा बल्कि आतंकवादियों के पूर्ण दल को तितर-बितर कर दिया। गोलीबारी के दौरान आतंकवादियों की एक टुकड़ी नाले के किनारे उभरे भाग पर आ गई और गोलीबारी कर

लेफ्टिनेंट अत्री को गंभीर रूप से घायल कर दिया। इस संकट के समय में, व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना तथा अपनी पार्टी को और अधिक हानि पहुंचाने से आतंकवादियों को रोकने के लिए कृत संकल्प लेफ्टिनेंट अत्री ने रीढ़ की घातक चोट के कारण वीरगति को प्राप्त होने से पूर्व एक और आतंकवादी को घातक रूप से घायल कर दिया जिसकी मौत की, बाद में पुष्टि की गई। उनकी वीरतापूर्ण कार्रवाई से प्रेरित होकर उनके सैनिकों ने पांच और आतंकवादी मार डाले। इस प्रकार आतंकवादियों के सम्पूर्ण दल का सफाया हो गया। इस आपरेशन में बड़ी संख्या में हथियार, गोलाबारूद तथा मुद्रा बरामद की गई।

लेफ्टिनेंट धीरेन्द्र सिंह अत्री ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में उत्कृष्ट वीरता, अडिग साहस तथा प्रेरणादायक नेतृत्व का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान दिया।

(अरुण मित्रा)
निदेशक

संख्या 128–प्रेज/2004 – राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को वीरतापूर्ण कार्यों के लिए **"शौर्य चक्र"** प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं:–

1. **कुमारी उदिता कर्माकर**
जलपाईगुड़ी, पश्चिमी बंगाल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 मार्च, 2000)

12 मार्च, 2000 की शाम को, जब कुमारी उदिता कर्माकर के माता-पिता घर से बाहर गए हुए थे, हथियार तथा पिस्तौलों से लैस चार डाकू उनके घर में घुस आए तथा उदिता की बहन के सिर पर पिस्तौल तान दिया। उन्होंने अलमारियों की चाबियां मांगी। डाकू कुछ जेवरात तथा अन्य कीमती सामान को लेकर एक कमरे से दूसरे कमरे में गए। उदिता ने उनका पीछा किया, उन्होंने उदिता को एक घूसा मारा। जब एक डाकू ने उदिता को टेलिफोन के तार से बांधने की कोशिश की तो उदिता ने दांतो से जोर से उसकी उंगली काटी। फिर उसने चिल्लाकर कहा कि उनके पिता जी पड़ोस में गए हैं तथा शीघ्र ही लौटेंगे। यह सुनकर, डाकूओं ने भागने की कोशिश की परन्तु उदिता ने उनमें से एक को पकड़ लिया तथा सहायता के लिए चिल्लाने लगी। डाकू ने पिस्तौल से उस पर चोट मार दी। उनके गालों पर चोटें आईं इसी बीच वहां बड़ी संख्या में भीड़ एकत्रित हो गई तथा डाकू को दबोच लिया।

कुमारी उदिता ने वीरतापूर्ण कार्य किया तथा सशस्त्र डाकुओं से भिड़ गई जिसके फलस्वरूप एक डाकू पकड़ा गया।

2. **कांस्टेबल के. सुदर्शन रेड्डी**
सीमा सुरक्षा बल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 30 सितम्बर, 2002)

आर-3 सीमा सुरक्षा बल तदर्थ बटालियन के एक अधीनस्थ अफसर तथा 18 अन्य रैंकों से गठित एक पार्टी को 30 सितंबर, 2002 को जम्मू-कश्मीर विधान-सभा चुनाव-2002 के दौरान गुलाब बाग निर्वाचन क्षेत्र

के अंतर्गत हसोट-II (चासना) के मतदान बूथ संख्या 17-ए की सुरक्षा ड्यूटी में तैनात किया गया था। लगभग 2200 बजे, चासना गाँव में कुछ व्यक्तियों की संदिग्ध हरकतों की सूचना मिलने पर मतदान केंद्र की सुरक्षा के लिए कांस्टेबल सुदर्शन रेड्डी के साथ एक अन्य कांस्टेबल को पीछे छोड़कर पार्टी कमांडर उस क्षेत्र की गश्त के लिए चला गया। लगभग आधी रात को कांस्टेबल सुदर्शन रेड्डी ने कुछ व्यक्तियों को, जो आतंकवादी थे, बूथ की ओर आते देख उन्हें ललकारा। आतंकवादियों ने उस पर भारी गोलीबारी कर दी। उसने जबावी गोलीबारी की और अपने पार्टी कमांडर को सूचित किया। उन्होंने कुमुक के पहुंचने तक आतंकवादियों को उलझाए रखा। अपने जीवन की परवाह किए बिना उच्च स्तर के साहस का प्रदर्शन करते हुए वे रेंगकर आतंकवादियों के निकट पहुंचे तथा उन पर गोलियां दागी। गोलीबारी के आदान-प्रदान में उन्हें गोलियां लगी परन्तु घावों के कारण वीरगति को प्राप्त होने से पूर्व उन्होंने आतंकवादियों पर गोलीबारी जारी रखी। इसी बीच, कुमुक पहुंच गई और आतंकवादी भाग गए। कांस्टेबल सुदर्शन रेड्डी के वीरतापूर्ण कार्य तथा सर्वोच्च बलिदान के परिणामस्वरूप चुनाव स्टॉफ की जिंदगियां बची तथा चुनाव प्रक्रिया में गड़बडी को रोका जा सका।

कांस्टेबल सुदर्शन रेड्डी ने ड्यूटी के निष्पादन में उत्कृष्ट वीरतापूर्ण कार्रवाई, अडिग साहस का प्रदर्शन करते हुए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

3. **कोड संख्या 2780 श्री शिरिंग दोरजी**
दिहाड़ी मजदूर, सीमा सड़क संगठन

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 दिसम्बर, 2002)

मणिपुर राज्य के इम्फाल जिले के कैथलमानबी में 17 असम राइफल के एल पी परियोजना पर अस्पताल भवन निर्माण के अंतर्गत श्री शिरिंग दोरजी, दिहाड़ी मजदूर को 15 दिसंबर, 2002 की रात, संतरी के रूप में तैनात किया गया था।

अस्पताल भवन में, परियोजना कार्य हेतु कीमती निर्माण सामग्री का भण्डारण किया गया था। 15 दिसंबर, 2002 को 0030 बजे मुखौटा लगाए हुए 10-12 आदमियों ने चोरी के इरादे से भवन में प्रवेश करने की कोशिश की। श्री शिरिंग दोरजी ने उनको ललकारा, हल्ला मचाया और "खुखरी" दिखाकर उन्हें रोकने की कोशिश की। चोरों ने श्री शिरिंग दोरजी पर हमला कर दिया लेकिन वे अपने पैरों पर खड़े रहे तथा घाव लगने के बावजूद वे हल्ला मचाते रहे। सही समय पर शोर मचाने के कारण, पास में तैनात असम राइफल के कार्मिक सहायता करने आ गए तथा चोरों को भागना पड़ा। व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल परवाह किए बिना श्री शिरिंग दोरजी के वीरतापूर्ण कार्य के फलस्वरूप मूल्यवान सामान को बचाया जा सका।

श्री शिरिंग दोरजी ने सशस्त्र चोरों के समक्ष सूझबूझ, पहल-शक्ति, अदम्य साहस तथा दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया।

4. **श्री विवेक सक्सेना, सहायक कमांडेंट**
सीमा सुरक्षा बल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 8 जनवरी, 2003)

जिला चंदेल (मणिपुर) के गांव साजिक तंपक में आतंकवादियों की उपस्थिति की विशिष्ट सूचना के आधार पर 8/9 जनवरी, 2003 की रात को श्री विवेक सक्सेना, सहायक कमांडेंट, द्वितीय बटालियन बी एस एफ, के नेतृत्व में एक कंपनी ने गांव को घेरकर तलाशी आपरेशन शुरू किया। अचानक आतंकवादियों ने पहाड़ी की चोटी से उन पर भारी गोलीबारी शुरू कर दी। तीव्रता से प्रति-कार्रवाई करते हुए श्री सक्सेना ने अपनी एल एम जी लगाई तथा अत्याधुनिक स्वचालित हथियारों से युक्त लगभग 250 आतंकवादियों पर जवाबी गोलीबारी की। आतंकवादियों की संख्या अधिक होने तथा भारी गोलीबारी के बावजूद श्री सक्सेना घबराए नहीं तथा उपलब्ध संसाधनों से आक्रमण किया। व्यक्तिगत सुरक्षा की किंचित भी परवाह किए बिना वह एक प्लाटून से दूसरी प्लाटून तक दौड़-दौड़कर सैनिकों को प्रोत्साहित करते रहे।

अंधेरा होने तक गोलीबारी चलती रही। धुंधली रोशनी का लाभ उठाते हुए आतंकवादी फिर से एकत्रित हुए तथा बी एस एफ की पार्टी के दांये पार्श्व पर भयंकर आक्रमण कर दिया। श्री सक्सेना ने अपने सैनिकों को व्यस्थापित किया तथा आतंकवादियों के आक्रमण को कारगर ढंग से पीछे धकेल दिया। धैर्य तथा साहस से श्री सक्सेना ने आतंकवादियों के आक्रमण को विफल कर दिया। श्री सक्सेना रेंगकर आगे बढ़े तथा आतंकवादियों को उलझाए रखा तथा सुरक्षित स्थान पर जाने के लिए अपने सैनिकों को गोलीबारी की आड़ दी। उनकी अचूक गोलीबारी से तीन आतंकवादी मारे गए। कार्रवाई के दौरान उन पर आतंकवादियों की ओर से गोलियों की बौछार हो गई तथा आतंकवादियों के साथ लड़ाई में उन्होंने अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

श्री विवेक सक्सेना ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में उत्कृष्ट वीरतापूर्ण कार्रवाई, अडिग साहस, निःस्वार्थता, अटल नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान दिया।

5. **एस जी कांस्टेबल फारूक अहमद**
जम्मू-कश्मीर पुलिस (मरणोपरांत)

और

6. **कांस्टेबल अब्दुल रशीद**
जम्मू-कश्मीर पुलिस (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 12 मई, 2003)

12 मई, 2003 को एस जी कांस्टेबल फारूक अहमद जम्मू-कश्मीर बैंक शाखा, शोपियां, पुलवामा में गार्ड प्रभारी के रूप में तैनात थे तथा कांस्टेबल अब्दुल रशीद गार्ड चौकी में ड्यूटी पर तैनात थे। लगभग 1145 बजे पिस्तौल से युक्त बुरका पहने हुए एक आतंकवादी ने बैंक में घुसने की कोशिश की। कांस्टेबल अब्दुल रशीद ने उसे अंदर घुसने नहीं दिया तथा पकड़ लिया जिस कारण दोनों में हाथपाई हो गई। इसी बीच ए. के. राइफलों से युक्त 5-6 मुखौटा पहने आतंकवादी बैंक में घुस गए। एक आतंकवादी ने हवा में गोली

चलाई तथा बैंक कर्मचारियों और ग्राहकों से लेटने के लिए कहा। बैंक के अन्दर ड्यूटी कर रहे कांस्टेबल फारूक ने तिजोरी की तरफ बढ़ रहे आतंकवादियों को ललकारा। एक आतंकवादी ने गोली चलाकर उसे घायल कर दिया। घायल होने के बावजूद कांस्टेबल फारूक अहमद ने जमीन पर तुरंत मोर्चा संभाला तथा जवाबी गोलीबारी में एक आतंकवादी को घायल कर दिया। दोनों ओर से भारी गोलीबारी शुरू हो गई तथा कांस्टेबल फारूक अहमद तथा कांस्टेबल अब्दुल रशीद दोनों गोली लगने से गंभीर रूप से घायल हो गए। बाद में, घावों के कारण दोनों वीरगति को प्राप्त हो गए। उनकी बहादुरी तथा सही समय पर कार्रवाई से आतंकवादियों को बिना बैंक लूटे भागना पड़ा। इस प्रकार लगभग 90 लाख रुपए लूटने का प्रयास विफल हुआ।

एस जी कांस्टेबल फारूक अहमद तथा कांस्टेबल अब्दुल रशीद ने उत्कृष्ट वीरतापूर्ण कार्रवाई, अडिग साहस तथा अनुकरणीय कर्त्तव्य-परायणता का प्रदर्शन किया और दोनों ने अपने जीवन को सर्वोच्च बलिदान किया जिसके कारण बैंक डकैती टल गई।

7. **श्री दिलीप अग्रवाल**
इंदौर, मध्यप्रदेश (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 मई, 2003)

19 मई, 2003 की रात को लगभग 10.40 बजे अग्रवाल नगर, इंदौर में दो अज्ञात हमलावरों ने श्रीमती उमा गुप्ता की सोने की जंजीर झटकने की कोशिश की। उन्होंने उनको चाकू घोंप दिया तथा घसीटने लगे। श्रीमती गुप्ता सहायता के लिए चिल्लाई। चिल्लाने की आवाज सुन कर श्री दिलीप अग्रवाल महिला की सहायता के लिए घटनास्थल की ओर दौड़े। वे श्रीमती गुप्ता की रक्षा के लिए हमलावरों से भिड़ गए। हमलावरों ने उनके पेट में चाकू घोंप कर उन्हें घायल कर दिया। इसके बाद, लूटेरे भाग खड़े हुए तथा श्रीमती गुप्ता के गहनों को नहीं ले जा सके। श्री अग्रवाल को अस्पताल ले जाना पड़ा। 5.6.2003 को वे घावों के कारण चल बसे।

श्री दिलीप अग्रवाल के असाधारण साहसिक कार्य से न केवल श्रीमती उमा गुप्ता का जीवन बच गया बल्कि उनके गले की जंजीर तथा कानों की बालियों को छीनने का हमलावरों का प्रयास भी विफल हुआ। इस कार्य के दौरान श्री दिलीप अग्रवाल ने एक अनजान महिला की मदद के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया तथा दूसरों के अनुकरण करने के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया।

8. **आईसी-60945 कैप्टन पेरीकलमकटील अब्राहम मैथ्यू, सेना मेडल**
3 सिख

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 21 जुलाई, 2003)

कैप्टन पेरीकलमकटील अब्राहम मैथ्यू, राजौरी जिले में नियंत्रण रेखा पर बटालियन एडज्यूटेंट के रूप में कार्य कर रहे हैं।

21 जुलाई, 03 को एक गांव में आतंकवादी होने की सूचना मिलने पर कैप्टन मैथ्यू एक त्वरित कार्रवाई

दल के साथ तुरंत चल पड़े तथा संदिग्ध मकान को घेर लिया। तत्पश्चात्, मक्के के खेत में छिपे आतंकवादियों की ओर से गोलीबारी शुरू होने तक वे आगे बढ़ते रहे। अपने दल को पुनः व्यवस्थापित करने के बाद वे और आगे बढ़े तथा भयंकर मुठभेड़ में एक आतंकवादी को मार दिया जबकि उनके सिर में भी गंभीर चोटें आई। अनेक घावों के बावजूद कैप्टन मैथ्यू रेंगकर आगे बढ़े और मूर्छित होने से पहले हथगोला फेंककर दूसरे आतंकवादी का सफाया कर दिया।

कैप्टन पेरीकलमकटील अब्राहम मैथ्यू, सेना मेडल, ने गंभीर घावों के बावजूद निकट की लड़ाई में दो आतंकवादियों को मारते हुए असाधारण वीरता तथा अडिग साहस का प्रदर्शन किया।

9. **जेसी-448779 सूबेदार प्रित पाल सिंह**
4 ग्रेनेडियर

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 अगस्त, 2003)

17 अगस्त, 2003 को तलाशी तथा सफाया आपरेशन के दौरान सूबेदार प्रित पाल सिंह ने जंगल में कुछ आतंकवादियों की उपस्थिति की पुख्ता जानकारी जुटाई तथा तलाशी का स्वेच्छा से नेतृत्व किया। लक्षित क्षेत्र में पहुंचने पर उन्होंने एक आतंकवादी को देखा। आतंकवादी ने उन पर गोली चलाई। सूबेदार प्रित पाल सिंह ने तुरंत जवाबी गोलीबारी की और आतंकवादी को मौके पर ही मार डाला।

इससे ढोक में छिपे अन्य आतंकवादी सावधान हो गए और उन्होंने अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। उनमें से दो बाहर आए तथा हथगोला फेंककर नाले की ओर भाग गए। हथगोले के फटने से सूबेदार प्रित पाल सिंह छर्रों से घायल हो गए। घायल होने के बावजूद, आतंकवादियों की गोलीबारी की बौछार के बीच वह ढोक की ओर रेंगकर आगे बढ़े तथा दो हथगोले अंदर फेंके। अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना और अडिग साहस का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने व्यक्तिगत रूप से ढोक पर धावा बोल दिया तथा गोलीबारी की भयंकर लड़ाई में और दो आतंकवादियों का सफाया कर दिया।

सूबेदार प्रित पाल सिंह ने आतंकवादियों का सामना करते हुए असाधारण वीरता, अडिग साहस, पहल-शक्ति तथा सूझबूझ का प्रदर्शन किया।

10. **2885672 लांस नायक देशपाल सिंह**
राजपूताना राइफल/9 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 अगस्त, 2003)

17 अगस्त, 2003 को लांस नायक देशपाल सिंह जम्मू-कश्मीर के जिला अनंतनाग के एक गांव में घेराबंदी तथा तलाशी अभियान में एक स्टॉप में शामिल थे।

जब घेरा स्थापित किए जाने की प्रक्रिया चल रही थी, भागने की नाकाम कोशिश में तीन आतंकवादी

चारों दिशाओं में गोलियों की बौछार करते हुए तथा हथगोले फेंकते हुए गांव के भीतर स्थित एक घर से बाहर आए। लांस नायक देशपाल सिंह उस स्टॉप में थे और यह स्टॉप आतंकवादियों की गोलीबारी की सीधी रेखा में था। अदम्य युद्ध भावना का प्रदर्शन करते हुए उन्होंने अपने साथियों को सुरक्षित आड़ लेने के लिए कहा जबकि वे अकेले ही आतंकवादियों से उलझे रहे। आमने-सामने की लड़ाई में लांस नायक देशपाल सिंह के बाजू में गोली लगी परंतु गंभीर घाव के बावजूद उन्होंने एक आतंकवादी को मौके पर ही मार गिराया। व्यक्तिगत सुरक्षा और अत्यधिक रक्तस्राव की किंचित भी परवाह किए बिना वे बार-बार गोलियों के सामने आते रहे तथा आतंकवादियों को उलझाए रखा। लांस नायक देशपाल सिंह को एक बार फिर से चेहरे पर गोली लगी परंतु वह बहादुर सैनिक अडिग रहा। यद्यपि वे बेहोश हो रहे थे परंतु एक अन्य भागते आतंकवादी को गोली से घायल कर दिया जिससे उनके बच निकलने के प्रयास को असफल कर दिया। घातक घावों के बावजूद इस अद्वितीय प्रयास से उनके साथियों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सकी तथा इससे घायल आतंकवादी को मार गिराने में मदद मिली। बाद में वे अपने घावों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

लांस नायक देशपाल सिंह ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में कर्तव्य परायणता से बढ़कर उत्कृष्ट वीरता, व्यक्तिगत साहस का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान दिया।

11. **एसएस-37068 मेजर संजय सिंह तंवर, सेना मेडल एवं बार**
16 पंजाब

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 अगस्त, 2003)

18 अगस्त, 2003 को मेजर संजय सिंह तंवर ने पूर्वी सेक्टर में एक नदी के किनारे एक एम्बुश लगाया। उन्होंने थर्मल इमेजर के माध्यम से देखा कि तीन व्यक्ति पानी के रास्ते थैले ले जा रहे हैं। कुशाग्र बुद्धि तथा दक्षता का परिचय देते हुए उन्होंने यह सोचकर उनका पीछा करने की आवश्यकता महसूस की कि वे सम्भवतया आतंकवादियों के छिपने के ठिकाने पर राशन की आपूर्ति करने जा रहे हैं। आधे घंटे तक उच्च स्तर के युद्ध कला तथा क्षेत्र कौशल का इस्तेमाल करते हुए चुपचाप उनका पीछा करने के बाद उन्होंने घने जंगल के भीतर अस्थायी छिपने के ठिकाने के पास सशस्त्र आतंकवादियों को देखा।

उत्कृष्ट रणनीति कुशाग्र बुद्धि को प्रदर्शित करते हुए मेजर तंवर ने अपनी पार्टी को तीन छोटी टुकड़ियों में बांट दिया। आतंकवादियों का पड़ोसी देश की ओर जाने वाले रास्ते को रोकने के लिए दो स्टॉप लगाए गए और अस्थायी ठिकाने पर दबिश देने के लिए उन्होंने तीसरे दल का नेतृत्व स्वयं किया। चट्टानों पर रेंगकर आगे से नेतृत्व करते हुए तथा खराब मौसम में ऊबड़खाबड़ जमीन तथा घने जंगल का पूर्ण इस्तेमाल करते हुए वे लक्षित क्षेत्र के और अधिक निकट गये तथा अचूक गोलीबारी से एक आतंकवादी का सफाया कर दिया। शेष आतंकवादियों ने स्वचालित हथियारों का इस्तेमाल करते हुए अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी तथा हथगोले फेंके। गोलीबारी तथा हथगोलों के विस्फोट से घबराए बिना वे रेंगकर आगे बढ़े तथा दूसरे आतंकवादी को भी मार गिराया। तेज तथा निर्भीक कार्रवाई से हैरान होकर तीसरे आतंकवादी ने बच निकलने के हताश प्रयास में अंधाधुंध गोलीबारी की। अदम्य युद्ध भावना, दृढ़ता तथा जागरूकता का परिचय देते हुए वे और निकट आए तथा तीसरे आतंकवादी को ढेर कर दिया।

मेजर संजय सिंह तंवर ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में दृढ़ संकल्प, रणनीति, कुशाग्र बुद्धि, अडिग साहस, फौलादी इरादे और उत्कृष्ट वीरता का प्रदर्शन किया।

12. **3183694 नायक अनिल कुमार**
16 जाट, (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 24 अगस्त, 2003)

नायक अनिल कुमार 23 अगस्त, 2003 की रात को सीमा पर से घुसपैठ कर चुके एक आतंकवादी को फांसने के लिए लगाई गई एम्बुश पार्टी में शामिल थे। 24 अगसत, 2003 को 0600 बजे क्षेत्र की तलाशी लेने का निर्णय लिया गया। एम्बुश पार्टी को तीन उप-दलों में बांटा गया। नायक अनिल कुमार उप-दल में शामिल थे। क्षेत्र की तलाशी के दौरान अचानक घनी झाड़ियों से आतंकवादी बाहर आया तथा ए के राइफल से गोली चलाई और हथगोले फेंके। नायक अनिल कुमार सूझबूझ, निःस्वार्थता तथा अनुकरणीय साहस का परिचय देते हुए अपने साथियों के समाने कूद गए तथा स्वयं गोलियों के सामने आ गए तथा उसी समय जवाबी गोलीबारी से आतंकवादी को गंभीर रूप से घायल कर दिया। छाती तथा बाजू पर गोली लगने के कारण नायक अनिल कुमार मौके पर ही वीरगति को प्राप्त हो गए। उनके सर्वोच्च बलिदान से उनके साथी सैनिकों की जानें बच गईं।

नायक अनिल कुमार ने अदम्य साहस, निःस्वार्थता का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान करके अपने साथियों की जानें बचाईं।

13. **कांस्टेबल बलबीर सिंह**
सीमा सुरक्षा बल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 30 अगस्त, 2003)

नूरबाग (श्रीनगर) के एक घर में एक कट्टर आतंकवादी अर्थात राणा ताहिर नदीम उर्फ गाजी बाबा, जे ई एम, के मुख्य आपरेशन कमांडर की उपस्थिति की विशिष्ट सूचना के आधार पर 30 अगस्त, 2003 को सीमा सुरक्षा बल द्वारा एक घेराबंदी तथा तलाशी आपरेशन शुरू किया गया था। श्री नरेंद्रनाथ धर दुबे, सेकेंड-इन-कमांड ने कांस्टेबल बलबीर सिंह एवं अन्य अफसरों/कार्मिकों के साथ घर का दरवाजा तोड़कर अन्दर प्रवेश किया। घर के भू-तल तथा प्रथम तल की तलाशी ली। घर के द्वितीय तल में पहुंचने पर उसे खाली पाया। तथापि, श्री दुबे को कमरे में विचित्र ढंग से रखी दो अलमारियों को देखकर शक हुआ। उन्होंने कार्मिकों को आड़ लेने तथा अलमारी पर लगे दर्पण को तोड़ने के लिए कहा। दर्पण टूटने पर चोर दरवाजा खुल गया तथा इसमें छिपे आतंकवादियों ने गोलियों की भारी बौछार कर दी तथा हथगोले फेंके। कांस्टेबल बलबीर सिंह सहित श्री दुबे को अनेक गोलियां लगीं। घायल होने के बावजूद दोनों ने जवाबी गोलीबारी की। एक आतंकवादी छिपने के ठिकाने से बाहर कूदा तथा नजदीक से श्री दुबे पर गोली चलाने ही वाला था कि तभी कांस्टेबल बलबीर सिंह व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना कूद कर अफसर के आगे आ गए।

कांस्टेबल बलबीर सिंह के पेट में गोलियां लगीं परंतु उससे अपने अफसर की जान बचा दी। मौके पर ही घावों के कारण वीरगति को प्राप्त होने तक वह आतंकवादी पर गोलियां चलाता रहा।

कांस्टेबल बलबीर सिंह ने आतंकवादियों के साथ लड़ाई में अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना उत्कृष्ट वीरतापूर्ण कार्रवाई, अडिग साहस तथा अनुकरणीय कर्त्तव्यपरायणता का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान दिया।

14. **जेसी-428838 नायब सूबेदार अजीत सिंह,**
पंजाब/37 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 21 सितम्बर, 2003)

21 सितम्बर 2003 को उत्तरी सेक्टर के एक गांव में खोजी आपेरशन के दौरान नायब सूबेदार अजीत सिंह दल का नेतृत्व कर रहे थे। 0930 बजे नायब सूबेदार अजीत सिंह को जंगल में दो आतंकवादियों के छिपे होने की सूचना मिली। उन्होंने अपनी टीम को तैनात किया और जब वे अपने साथी के साथ घनी झाड़ियों में रेंगते हुए आगे बढ़ रहे थे तभी आतंकवादियों ने उन पर गोलीबारी कर दी। इस भारी गोलीबारी से भयभीत हुए बिना वह आगे बढ़े और नाले की ओर भाग रहे एक आतंकवादी को मार गिराया। इस कार्रवाई में उनके साथी के दाएं कंधे में गोली लगी जबकि उनके सीने, गर्दन ओर पेट में कई गोलियां लग गईं। अपने जख्मों की परवाह किए बिना वह अपने साथी को बचाकर सुरक्षित स्थान पर ले गए और दूसरे आतंकवादी से भिड़ पड़े। अत्यधिक खून बहने के बावजूद वह अंधाधुंध गोलियां बरसा रहे आतंकवादी की ओर खिसकते गए और आमने-सामने की लड़ाई में उसे मार डाला। वह अंतिम सांस तक अपनी टीम का मार्गदर्शन करते हुए उनका मनोबल बढ़ाते रहे और वीरगति को प्राप्त हो गए।

नायब सूबेदार अजीत सिंह ने आतंकवादियों से लड़ते समय अदम्य साहस, असाधारण वीरता, प्रेरणादायक नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया।

15. **एसएस-37780 मेजर आदित्य चौहान**
6 महार

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 10 सितम्बर, 2003)

10 सितंबर, 2003 को मेजर आदित्य चौहान एक खोजी दल के कमांडर थे। घने मक्का के खेतों से घिरा हुआ प्रतिकूल भू-भाग होने के कारण खोज का कार्य जोखिम भरा तथा कठिन था। खोज के दौरान, दल संदिग्ध क्षेत्र में पहुंच गया और मक्के के खेत से की गई गोलियों की बौछार और हथगोलों की चपेट में आ गया। गोलीबारी की परवाह किए बिना मेजर आदित्य चौहान सभी की आड़ और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए दल के एक-एक व्यक्ति के पास गए। अपनी सूझबूझ तथा चतुर नेतृत्व का प्रदर्शन करते हुए मेजर आदित्य ने सहायक दल को आतंकवादियों से भिड़ने का आदेश दिया। अपने साथी द्वारा दी गई आड़ में वे रेंगते हुए आगे बढ़े और एक आतंकवादी को मार गिराया। दूसरे आतंकवादी की भारी गोलीबारी के बीच

और अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना मेजर आदित्य मक्के के खेत में आगे बढ़े और उसे भी मार गिराया।

मेजर आदित्य चौहान ने इस लड़ाई में अनुकरणीय साहस, कर्त्तव्य परायणता तथा असाधारण नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

16. **4571437 सिपाही किरण कुमार**
6 महार (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 11 सितम्बर, 2003)

सिपाही किरण कुमार एक उत्कृष्ट स्काउट थे। 11 सितंबर, 2003 को 0900 बजे विशिष्ट सूचना मिलने पर घातक प्लाटून ने संदिग्ध क्षेत्र की घेराबंदी कर दी। सिपाही किरण कुमार सहित घातक दल के साथ एक अफसर और उसके साथी यूनिट ट्रेकर डॉग के सहारे उस क्षेत्र में पहुंचे। अचानक ही मक्के के खेत में सिपाही किरण कुमार के साथी पेड़ के पीछे से की गई गोलियों की बौछार की चपेट में आ गए। सिपाही किरण कुमार अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना तथा आतंकवादी की लगातार गोलीबारी और हथगोलों से भयभीत हुए बिना आगे बढ़कर आतंकवादी के निकट पहुंचे और उसे मार गिराया तथा अपने साथियों की जान बचाई। रेंगते समय सिपाही किरण कुमार दूसरे आतंकवादी के सामने आ गए। दोनों ने एक साथ गोली चलाई, किंतु दूसरा आतंकवादी मारा गया। इस साहसिक कार्रवाई में सिपाही किरण कुमार के सिर में गोली लग गई और वे सुरक्षित स्थान पर ले जाते समय अपने जख्मों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

सिपाही किरण कुमार ने अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना आतंकवादियों की गोलियों के समाने उत्कृष्ट वीरता, निःस्वार्थ समर्पण और अद्वितीय सखा भाव का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान किया ।

17. **3181886 नायक मुन्ना लाल मुन्डेल**
9 जाट

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 18 सितम्बर, 2003)

नायक मुन्ना लाल मुन्डेल उस त्वरित कार्रवाई दल के सदस्य थे जिसने 18 सितंबर, 2003 को जम्मू-कश्मीर के नौशेरा सेक्टर में अपनी चौकी पर आतंकवादियों द्वारा बोले गए धावे को विफल कर दिया था।

नायक मुन्ना लाल मुन्डेल ने अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह किए बिना अनुकरणीय साहस का प्रदर्शन करते हुए नियंत्रण रेखा पर आतंकवादी छापामार दल पर उग्र रूप से हमला कर दिया। जब त्वरित कार्रवाई दल पत्थरों के पीछे छिपे आतंकवादियों की खतरनाक गोलीबारी की चपेट में आ गया, तो वे पत्थरों के निकट पहुंचे और हथगोला फेंकते हुए आतंकवादियों पर टूट पड़े। घिर जाने पर, आतंकवादी भी उनकी

ओर झपट पड़े किंतु सैनिकोचित दक्षता का प्रदर्शन करते हुए नायक मुन्ना लाल मुन्डेल ने भयंकर आमने-सामने की लड़ाई में दो आतंकवादियों को, जिनमें से एक को गुत्थम-गुत्था की लड़ाई में कमांडो की खंजर से मार डाला और अपनी अति संवेदनशील चौकी तथा अपने साथियों की जान बचा ली। भाग रहे आतंकवादियों का पीछा करते समय एक बारूदी सुरंग पर उनका पैर पड़ गया और वे गंभीर रूप से घायल होकर गिर पड़े। वे भाग रहे आतंकवादियों से धैर्य के साथ जूझते रहे जो अपने पीछे आठ साथियों के शव और भारी मात्रा में हथियार तथा गोलाबारूद छोड़ गए थे।

नायक मुन्ना लाल मुन्डेल ने उत्कृष्ट तथा असाधारण वीरता, अद्वितीय साहस और युद्ध-भावना का प्रदर्शन किया।

18. **जेसी-488932 सूबेदार खिलौना सिंह**
14 जाट (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 19 सितम्बर, 2003)

सूबेदार खिलौना सिंह जम्मू-कश्मीर के जिला रजौरी में नियंत्रण रेखा पर घातक प्लाटून कमांडर के रूप में कार्य कर रहे थे।

19 सितंबर, 2003 को एक अफसर के नेतृत्व में घेराबंदी व तलाशी कार्रवाई के दौरान सूबेदार खिलौना सिंह और उनके साथी की मुठभेड़ दो आतंकवादियों के साथ बहुत ही निकट से हो गयी। उनका साथी आतंकवादी की गोली से जख्मी हो गया। अपने साथी के करीब मौजूद सूबेदार खिलौना सिंह ने स्थिति की गंभीरता को भांपते हुए अपने साथी के साथ तत्काल आतंकवादी पर टूट पड़े और प्राणघातक रूप से जख्मी हो जाने पर भी दोनों ने एक-एक आतंकवादी को गुत्थम-गुत्था की लड़ाई में मार डाला।

सूबेदार खिलौना सिंह ने भारतीय सेना की श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप असाधारण वीरता और प्रेरणादायक नेतृत्व का प्रदर्शन कर सर्वोच्च बलिदान किया तथा अपने साथियों के प्राण बचाए।

19. **जेसी-429470 नायब सूबेदार बाबू राम**
25 पंजाब

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 27 सितम्बर, 2003)

नायक सूबेदार बाबु राम नियंत्रण रेखा पर 'आपरेशन रक्षक तथा आपरेशन पराक्रम' के दौरान घातक प्लाटून कमांडर रह चुके हैं।

27 सितंबर, 2003 को जम्मू-कश्मीर में जिला पुंछ के एक गांव के मक्के के खेत में घेराबंदी तथा तलाशी कार्रवाई करते समय नायब सूबेदार बाबु राम का तीन आतंकवादियों से आमना-सामना हो गया जिन्होंने इन पर गोलियां चला दीं। अपने लिए गम्भीर खतरे की परवाह न करते हुए ये तुरंत ही गोलियां बरसाते हुए झपट पड़े और पहले आतंकवादी को गोली मार दी तथा दूसरे आतंकवादी पर हमला बोलकर

उसे बहुत ही नजदीक से मार गिराया। तीसरे आतंकवादी ने तत्काल मोर्चा संभाल लिया किंतु इसी बीच हटकर इन्होंने भी पुनः मोर्चा संभाल लिया और अपने साथी द्वारा उस आतंकवादी को मार गिराए जाने तक उससे पुनः उलझ पड़े।

03 अक्तूबर, 2003 को अग्रवर्ती रक्षित स्थान के निकट घात के समय तीन आतंकवादियों के एक दल को दो मीटर के रेंज के भीतर आने दिया और हथियार सटाकर गोलियां बरसाते हुए अगले आतंकवादी को मार गिराया जबकि अन्य दो आतंकवादी इनके साथियों द्वारा मारे गए।

नायब सूबेदार बाबु राम ने अत्यधिक निकट से की गई लड़ाई में तीन आतंकवादियों को मारने में गम्भीर खतरा होने के बावजूद उच्च कोटि की असाधारण वीरता, नेतृत्व और व्यावसायिकता का बार-बार प्रदर्शन किया है।

20. **13622724 पैराट्रूपर चेतन कुमार राणा**
पैरा/31 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 06 अक्तूबर, 2003)

06 अक्तूबर, 2003 को राष्ट्रीय राइफल यूनिट के एक दल, जिसके पैराट्रूपर चेतन कुमार राणा सदस्य थे, ने उत्तरी सेक्टर के एक जनरल एरिया में 1500 बजे तलाशी और सफाया मिशन चलाया। इस दल को एक घर में आतंकवादियों की मौजूदगी का सन्देह हुआ। स्काउट और प्वाइंट स्क्वाड ने तत्काल उस घर की घेराबंदी कर दी। सैनिकों द्वारा घर की तलाशी लेते समय दो आतंकवादी अचानक हथगोले फेंकते और गोलियां बरसाते हुए बाहर आ गए जिससे बाहर निकलने के मार्ग को घेरे खड़े पैराट्रूपर चेतन कुमार तथा अन्य सैनिक घायल हो गए। अपने सैनिकों पर गंभीर खतरे को देखते हुए, सीने में गोली लगने और हथगोलों के छर्रे से घायल होने के बावजूद अडिग रहते हुए, पैराट्रूपर चेतन कुमार राणा ने अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए अदम्य साहस का प्रदर्शन किया और अपने हथियार से गोलियां बरसाते हुए आगे बढ़ रहे आतंकवादियों पर धावा बोल दिया तथा अपने जख्मों के कारण वीरगति को प्राप्त होने से पहले एक साहसिक कार्रवाई में दोनों आतंकवादियों को मार गिराया।

पैराट्रूपर चेतन कुमार राणा ने आतंकवादियों से लड़ते समय असाधारण वीरता, अनुकरणीय अदम्य साहस का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान दिया।

21. **56575 हवलदार रामाकान्त सिंह**
5 असम राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 13 अक्तूबर, 2003)

13 अक्तूबर, 2003 को लगभग 1000 बजे एक अफसर, एक जूनियर कमीशन अफसर तथा 18 अन्य रैंकों वाली एक सैन्य टुकड़ी ने पूर्वी सेक्टर के एक जनरल एरिया में क्षेत्र आधिपत्य गश्त लगाते समय लगभग 100 गज की दूरी पर दो व्यक्तियों को धान के खेत में भागते हुए देखा। हवलदार रामाकान्त के नेतृत्व में स्काउट पार्टी उनका तत्काल पीछा करने लगी। पीछा किए जाने पर, आतंकवादियों ने उनकी स्काउट पार्टी पर अंधाधुंध गोलियां बरसा दीं। हवलदार रामाकान्त सिंह धान के खेतों में से पीछा करते हुए भाग रहे आतंकवादियों पर गोली चलाई और उनमें से एक को घायल कर दिया। आतंकवादी पहाड़ी तक पहुंच गए और ऊपर चढ़ने लगे। हवलदार रामाकान्त सिंह और उनके दल ने आतंकवादियों का लगातार पीछा किया और तलाशी के लिए नजदीक जाते समय उनके ऊपर घायल आतंकवादी ने गोलियों की बौछार कर दी जो झाड़ियों में छिपा था। गोली लगने से जख्मी हो जाने के बावजूद हवलदार रामाकान्त सिंह अपने हथियार से गोलियां बरसाते रहे और एक आतंकवादी पर धावा बोलकर उसे तुरंत मार डाला। वह गोलियां लगने से जख्मी हो जाने के कारण मौके पर ही वीरगति को प्राप्त हो गए।

हवलदार रामाकान्त सिंह अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करने में अदम्य साहस, दृढ़-निश्चय, अंतिम समाधान, साथीभाव का प्रदर्शन किया और सर्वोच्च बलिदान दिया।

22. **13688382 हवलदार वीरेन्द्र सिंह**
गार्ड्स/21 राष्ट्रीय राइफल्स (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 15 अक्तूबर, 2003)

हवलदार वीरेन्द्र सिंह उत्तरी सेक्टर में तलाश व मुठभेड़ गश्त दल के सदस्य थे। लगभग 1910 बजे, दो आतंकवादियों ने सिविलियन के भेष में अचानक ही गश्त दल पर कारगर गोलीबारी कर दी। गोलियों की पहली बौछार में हवलदार वीरेन्द्र सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्होंने वहां से तत्काल हटने से मना कर दिया और गहरे अंधेरे में गश्त दल का नेतृत्व करते रहे। व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न करते हुए वह गोली चलने की दिशा की ओर दौड़े और अकेले ही दोनों आतंकवादियों को मार डाला। हवलदार वीरेन्द्र सिंह के इस तात्कालिक अदम्य साहस के परिणामस्वरूप गश्त दल के अन्य सदस्यों की जान बच गई। इस सैन्य कार्रवाई में तीन ए के 47 राइफल, एक डिस्पोजल राकेट लांचर, तीन हथगोले, अंडर बैरल ग्रेनेड लांचर, एक रेडियो सेट और अन्य युद्ध-सामग्रियां बरामद की गईं। किंतु, अपने घावों के कारण हवलदार वीरेन्द्र सिंह वीरगति को प्राप्त हो गए।

हवलदार वीरेन्द्र सिंह ने आतंकवादियों से लड़ते समय उत्कृष्ट वीरता, अटल रहने की असाधारण शक्ति, अदम्य साहस और कर्त्तव्य से बढ़कर आक्रामक भावना का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान दिया।

23. **5349939 राइफलमैन हस्त बहादुर गुरुंग**
4/4 गोरखा राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 अक्तूबर, 2003)

20 अक्तूबर, 2003 को पूर्वी सेक्टर के जनरल एरिया में आतंकवादियों की मौजूदगी के बारे में एक विशिष्ट सूचना के आधार पर 0300 बजे तलाशी तथा सफाया कार्रवाई के लिए घातक प्लाटून बनाई गई।

22 अक्तूबर, 2003 को गांव के तंग मार्ग को पार करते समय घातक दस्ते पर भारी गोलाबारी हो गई, जिससे आगे बढ़ रहा दल घिर गया। सघन और कारगर गोलीबारी के बीच आगे बढ़ना कठिन हो गया। अपनी स्नाइपर राइफल के साथ राइफलमैन हस्त बहादुर गुरुंग अदम्य साहस तथा सूझबूझ का परिचय देते हुए अनुकूल स्थान तक पहुंचने के लिए रेंगते हुए आगे बढ़े। अनुकूल स्थान पर पहुंचकर राइफलमैन हस्त बहादुर गुरुंग ने आगे बढ़ रहे दल पर स्वचालित हथियार से गोलीबारी कर रहे एक आतंकवादी पर गोली चला दी और उसे मौके पर ही मार डाला। उनकी इस कार्रवाई के परिणामस्वरूप आतंकवादियों ने आगे बढ़ रहे दल की बजाय राइफलमैन हस्त बहादुर गुरुंग पर गोलीबारी शुरू कर दी। स्वयं पर हो रही भारी गोलीबारी की परवाह न करते हुए राइफलमैन हस्त बहादुर गुरुंग रेंगते हुए आगे बढ़े। अपनी सुरक्षा की बिल्कुल भी चिंता न करते हुए और अपनी जान को जोखिम में डालकर उन्होंने एक और आतंवादी को मार डाला। इस साहसिक कार्रवाई में राइफलमैन हस्त बहादुर गुरुंग को आतंकवादी की गोलियां लग गईं। बाद में जख्मों के कारण वह वीरगति को प्राप्त हो गए।

राइफलमैन हस्त बहादुर गुरुंग ने गोलीबारी के बीच अत्यधिक साहस और अति असाधारण वीरतापूर्ण कार्य का प्रदर्शन किया तथा राष्ट्र के लिए सर्वोच्च बलिदान किया ।

24. **2694122 ग्रेनेडियर अर्जन सिंह**
12 ग्रेनेडियर (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 22 अक्तूबर, 2003)

आतंकवादियों की गतिविधियों के बारे में अपने स्रोतों से मिली विशिष्ट सूचना के आधार पर 22 अक्तूबर, 2003 को लगभग 2230 बजे यूनिट लोकेशन से जनरल एरिया के लिए एक सैन्य दस्ता चला। स्थानापन्न कमांडिंग अफसर ने घात दल का नेतृत्व किया। घात दल लगभग 0230 बजे उस क्षेत्र में पहुंचा और तैनात हो गया। लगभग 0610 बजे घात दल ने छह-सात आतंकवादियों के एक दल को घात स्थल की ओर आते देखा और जब आतंकवादी नजदीक आ गए तो उन्होंने गोलियां बरसाकर एक आतंकवादी को मौके पर ही मार डाला तथा अन्य कई आतंकवादियों को घायल कर दिया। आतंकवादी निकट के जंगलों में फैल गए और घात दल की ओर जवाबी गोलीबारी करने लगे। अपने कमांडिंग अफसर के साथ ग्रेनेडियर अर्जन सिंह ने भाग रहे आतंकवादियों का पीछा किया और भारी गोलीबारी के बावजूद नजदीक पहुंचे और दोनों ओर से हुई भारी गोलीबारी के बाद निजी हथियार से एक आतंकवादी को मार डाला। दोनों ओर से की गई गोलीबारी में ग्रेनेडियर अर्जन सिंह के कंधे के निकट ऊपरी बांए सीने में गोली लग गई। घायल हो जाने

के बावजूद, ग्रेनेडियर अर्जन सिंह ने वहां से हटने से मना कर दिया और आतंकवादियों से लड़ते रहे। एक अन्य आतंकवादी जंगल से निकलकर उनकी ओर बढ़ा किंतु वह भी ग्रेनेडियर अर्जन सिंह द्वारा मारा गया। दो और आतंकवादियों को उनके कमांडिंग अफसर ने मार गिराया। ग्रेनेडियर अर्जन सिंह को 23 अक्तूबर, 2003 को हेलीकाप्टर द्वारा सैन्य अस्पताल पहुंचाया गया, किंतु वे जख्मों के कारण उसी दिन वीरगति को प्राप्त हो गए।

ग्रेनेडियर अर्जन सिंह ने आतंकवादियों से लड़ते समय अदम्य साहस, वीरता, दृढ़-निश्चय का प्रदर्शन किया और सर्वोच्च बलिदान दिया।

25. **जेसी-488513 सूबेदार जयसिंह**
जाट/45 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 31 अक्तूबर, 2003)

सूबेदार जयसिंह राष्ट्रीय राइफल यूनिट में प्लाटून कमांडर के रूप में सेवारत हैं। 31 अक्तूबर, 2003 को जब उनकी जम्मू-कश्मीर में पुंछ जिला के एक गांव में संदिग्ध घरों की आंतरिक घेराबंदी के लिए तैनाती की गई तो आतंकवादियों ने स्वचालित हथियारों से गोलीबारी कर दी जिसके परिणामस्वरूप भयंकर लड़ाई हो गई। सूबेदार जयसिंह ने कारगर लड़ाई के बावजूद अपनी घेराबंदी को पुनः व्यवस्थित किया और बड़ी दक्षता से लक्षित घर में आग लाग दी। खिड़की के रास्ते से भाग रहे एक आतंकवादी को उन्होंने मार गिराया। सूबेदार जयसिंह के स्टॉप पार्टी पर धावा बोलते हुए दो आतंकवादी घर से बाहर भागे उनमें से एक के पैर पर इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस बंधा हुआ देखा गया। आसन्न मृत्यु के सामने अति असाधारण वीरता का प्रदर्शन करते हुए अपने अधीनस्थों को बचाने के लिए सूबेदार जयसिंह अपने स्टॉप से बाहर आए और स्वचालित हथियार से आग उगलते हुए आंतकवादी को रोक उसे मार डाला। घातक रूप से जख्मी हो जाने पर भी उन्होंने लड़ाई जारी रखी और अपने घावों के कारण वीरगति को प्राप्त होने से पहले हथगोला फेंककर तीसरे आतंकवादी का सफाया कर दिया।

सूबेदार जयसिंह ने आतंकवादियों से लड़ने में दृढ़ निश्चय, अदम्य साहस और निर्भीक कार्रवाई का प्रदर्शन किया तथा साथियों को बचाने के लिए सर्वोच्च बलिदान किया।

26. **15321590 सेपर जी प्रकाश**
इंजीनियर/44 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 16 नवंबर, 2003)

आतकवादियों की मौजूदगी के बारे में सूचना मिलने पर एक तलाशी दल पूर्वी सेक्टर के एक कस्बे में पहुंची। 16 नवंबर, 2003 को 0730 बजे तलाशी शुरू की गई। तलाशी के दौरान अग्रणी स्काउट सैपर जी

प्रकाश और उनके साथी पर गोलीबारी हो गई। अपनी सुरक्षा की परवाह न करते हुए वे नजदीक के घर में दौड़कर घुस गए और कारगर गोलीबारी करते हुए आतंकवादियों से भिड़ गए। इस लड़ाई के दौरान सैपर जी प्रकाश ने लक्षित घर की खिड़की के निकट एक आतंकवादी को देखा और उसे मौके पर ही मार डाला। चूंकि दूसरे आतंकवादी पर प्रभावी गोलबारी नहीं हो रही थी इसलिए इम्प्रोवाइज्ड एक्सप्लोसिव डिवाइस लगाया गया। वह फटने वाला था तभी आतंकवादी ने भारी गोलीबारी कर दी और सैपर जी प्रकाश तथा उसके साथी को जख्मी करके खिड़की से बाहर कूद गया। यद्यपि सैपर जी प्रकाश जख्मी हो गए थे, किंतु उन्होंने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना अपने साथी को आड़ देते हुए आतंकवादी पर कारगर गोलीबारी करके उसे अशक्त कर दिया जो बाद में मारा गया। सैपर जी प्रकाश ने घायल हो जाने के बावजूद एक विदेशी आतंकवादी को मारने और एक आतंकवादी को घायल करने में अदम्य साहस का प्रदर्शन किया। सैपर जी प्रकाश गोली लगने से घायल हो जाने के कारण मौके पर ही वीरगति को प्राप्त हो गए।

सैपर जी प्रकाश ने आमने-सामने की लड़ाई में अपने आपको गम्भीर खतरे में डालते हुए समझ, दिलेरी, उत्कृष्ट पहलशक्ति का प्रदर्शन किया और आतंकवादियों से लड़ते समय सर्वोच्च बलिदान दिया।

27. **2896094 राइफलमैन लक्ष्मण सिंह**
राजपूताना राइफल/9 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 07 दिसंबर, 2003)

राइफलमैन लक्ष्मण सिंह जम्मू-कश्मीर के एक गांव में राष्ट्रीय राइफल बटालियन द्वारा शुरू की गई घेराबंदी और तलाशी कार्रवाई में शामिल थे।

07 दिसंबर, 2003 को 1530 बजे तक गांव की पूरी तरह से घेराबंदी कर ली गई थी। 1620 बजे, तलाशी दल पर आतंकवादियों द्वारा गोलीबारी कर दी गई और घमासान लड़ाई शुरू हो गई। 1630 बजे, एक आतंकवादी ने घर की खिड़की से कूदकर भागने का दुस्साहस किया। राइफलमैन लक्ष्मण सिंह ने आतंकवादी को करीब आने का मौका दिया और अपने निजी हथियार का इस्तेमाल करके उसे मार गिराया। इसी बीच, उन्होंने एक अन्य आतंकवादी को गोलियां बरसाते हुए अपनी ओर बढ़ते देखा। राइफलमैन लक्ष्मण सिंह सभी सावधानियों को ताक पर रखते हुए अपने आपको गंभीर खतरे में डालकर खड़े हो गए और उसका रास्ता रोक लिया। इस लड़ाई में राइफलमैन लक्ष्मण सिंह को एक गोली लग गई किंतु वे आतंकवादी पर गोलियां बरसाते रहे और मूर्छित होने से पहले उसे मार डाला। अस्पताल ले जाते समय उन्होंने अपनी अंतिम सांस ली।

राइफलमैन लक्षमण सिंह ने देश के लिए आतंकवादियों से लड़ते समय उत्कृष्ट वीरता और दिलेरी का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान दिया।

28. **3401087 सिपाही जसबीर सिंह**
7 सिख

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 21 दिसबंर, 2003)

सिपाही जसबीर सिंह जम्मू-कश्मीर के जिला पुंछ में नियंत्रण रेखा पर कमांडिंग अफ़सर के त्वरित कार्रवाई दल के सदस्य थे।

21 दिसंबर, 2003 को एक मुठभेड़ के बाद तलाशी के दौरान सिपाही जसबीर सिंह ने झाड़-झंखाड़ में संदिग्ध हलचल महसूस की। सिपाही जसबीर सिंह को देखकर दो आतंकवादियों ने उन पर गोलियों की भारी बौछार कर दी जो ऊबड़-खाबड़ जमीन की आड़ लेकर रेंगते हुए आगे बढ़ रहे थे। कारगर गोलीबारी की ज़द में होने के बावजूद ये बाजू से निकलकर और करीब आ गए और काफी नजदीक से एक आतंकवादी को मार डाला। दूसरा आतंकवादी सिपाही जसबीर सिंह पर गोलियां बरसाता रहा जो हथगोला फेंककर उसे उलझाए हुए थे और उसको भागने से रोके हुए थे। जब आतंकवादी की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हो रही थी, तो सिपाही जसबीर सिंह ने अदम्य साहस और निडरता का प्रदर्शन किया और आतंकवादी के नजदीक पहुंचने के लिए झाड़ियों में घुस गए। तभी आतंकवादी ने उन पर गोलीबारी कर दी। एक तरफ उछलकर सिपाही जसबीर सिंह ने जवाबी गोलीबारी की और दूसरे आतंकवादी को काफी नजदीक से मार डाला।

सिपाही जसबीर सिंह ने आमने-सामने की लड़ाई में एक-एक करके दोनों आतंकवादियों को मारने में असाधारण वीरता और अदम्य साहस का प्रदर्शन किया।

29. **आईसी-60708 कैप्टन विवेक मिश्रा**
16 गढ़वाल राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 24 दिसंबर, 2003)

24 दिसंबर, 2003 को कैप्टन विवेक मिश्रा ने आसूचना प्राप्त करने के लिए असाधारण उत्साह का प्रदर्शन किया और एक स्रोत को विशिष्ट कार्य सौंपकर पूर्वी सेक्टर के एक जनरल एरिया में आतंकवादियों के एक दल द्वारा घुसपैठ किए जाने के बारे में विश्वसनीय सूचना प्राप्त की। इस अफसर ने बड़ी ही चतुराई से घात बिठाया। घात के स्काउट ने थर्मल इमेजरी रात्रि दर्शी उपकरणों का इस्तेमाल करके संदिग्ध गतिविधियां देखी और घमासान लड़ाई शुरू हो गई जिसमें दो आतंकवादी मारे गए।

भागने से रोकने की तात्कालिकता को भांपते हुए, इस अफसर ने बाजू से निकलकर उपयुक्त ठिकाने पर मोर्चा संभाल लिया। अदम्य साहस तथा दृढ़-निश्चय का प्रदर्शन करते हुए वह स्थान बदलते रहे और सघन गोलीबारी करके तीसरे आतंकवादी को मार डाला। वे चौथे आतंकवादी के निकट पहुंचे और अपनी ए के-47 राइफल से गोलियों की बौछार करके उसे भी मार गिराया। पांचवां आतंकवादी भयभीत हो गया और उसने इस अफसर पर छलांग लगा दी। आमने-सामने की घमासान लड़ाई में इस अफसर ने निर्भीकता दिखाते हुए और अपनी सुरक्षा के खतरे को भुलाकर पांचवें आतंकवादी को धर-दबोचा और अंततः उसे मार डाला।

कैप्टन विवेक मिश्रा ने इस सैन्य कार्रवाई के दौरान उत्कृष्ट वीरता, अदम्य साहस तथा युद्ध-भूमि के उत्कृष्ट नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

30. **एसएस-38315 मेजर ललित प्रकाश**
3 राजपूत (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 17 जनवरी, 2004)

16 जनवरी, 2004 को मेजर ललित प्रकाश ने उत्तरी सेक्टर के एक गांव में दो आतंकवादियों को पकड़ लिया। आरंभिक पूछताछ से जंगल-क्षेत्र में गुप्त ठिकाने का संकेत मिला। 17 जनवरी, 2004 को मेजर ललित प्रकाश ने गुप्त ठिकाने के रास्ते का पता लगाने के लिए एक गश्त-दल का नेतृत्व किया। 0815 बजे जब जंगल की ओर जाते समय गश्त-दल पर कारगर गोलीबारी हो गई तो मेजर ललित प्रकाश ने उग्र प्रतिक्रिया की और जवाबी गोलीबारी की। दोनों ओर की गोलीबारी में मेजर ललित प्रकाश, उनके रेडियो आपरेटर और एक नर्सिंग सहायक को गोलियां लग गईं। दोनों ओर से घमासान लड़ाई शुरू हो गई तथा गश्त-दल गुप्त ठिकाने से की गई कारगर गोलीबारी की चपेट में आ गया। मेजर ललित प्रकाश ने अपने जख्मों की परवाह किए बिना, भारी हिम में रेंगते हुए दो आतंकवादियों को मार डाला और एक को घायल कर दिया। अफसर की इस कार्रवाई से दल के बाकी सदस्यों को आड़ लेने का मौका मिल गया। वह अफसर, वहां से हटाए जाने से पहले ही, अपने जख्मों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गया। उनके इस वीरतापूर्ण कार्रवाई से प्रेरित होकर गश्त-दल ने चार और आतंकवादियों को मार गिराया तथा गुप्त ठिकाने का पूरी तरह से सफाया कर दिया।

मेजर ललित प्रकाश ने आतंकवादियों से लड़ते हुए उत्कृष्ट वीरता, प्रेरणादायक नेतृत्व का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान दिया।

31. **15140924 गनर बाबीचेन कोईकलाम एलेक्स**
तोपखाना/19 राष्ट्रीय राइफल

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 29 जनवरी, 2004)

गनर बाबीचेन कोईकलाम एलेक्स 29 जनवरी, 2004 को तलाशी कार्रवाई के दौरान आंतरिक घेराबंदी-दल के सदस्य थे। लगभग 1730 बजे, लक्षित घर की जांच-पड़ताल के समय जब इनका सैन्य दस्ता एक खुले भू-खंड को पार कर रहा था, तो वह करीब के ही एक गौशाला से स्वचालित हथियार से की गई भारी गोलीबारी की चपेट में आ गया। गनर बाबीचेन कोईकलाम एलेक्स अपने साथियों के लिए खतरा भांपते हुए बारिश और धुंध की आड़ लेकर रेंगते हुए आगे बढ़े और गौशाला के पीछे से गोलियां बरसा रहे आतंकवादियों के नजदीक पहुंच गए तथा अनुकरणीय सूझबूझ और अदम्य साहस का परिचय देते हुए आमने-सामने की मुठभेड़ में एक आतंकवादी को मार डाला तथा दूसरे को जख्मी कर दिया। जख्मी आतंकवादी गौशाला में भाग गया और वहीं से स्वचालित हथियार से गोलीबारी करने लगा। गनर बाबीचेन

कोईकलाम एलेक्स अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए रेंगते रहे और गौशाला के प्रवेश-द्वार पर पहुंचकर अंदर एक हथगोला फेंका जिससे एक आतंकवादी मारा गया। इन दोनों आतंकवादियों का सफाया कर दिए जाने से आंतरिक घेराबंदी-दल को लक्षित घर पर पकड़ मजबूत करने के लिए लाभप्रद मोर्चा संभालने का मौका मिल गया, जिससे चार आतंकवादी और मारे गए।

नायक बाबीचेन कोईकलाम एलेक्स ने आतंकवादियों की गोलीबारी के सामने उत्कृष्ट वीरता, अदम्य साहस, अनुकरणीय नेतृत्व तथा सैनिकों की परवाह का प्रदर्शन किया।

32. **जेसी-548602 सूबेदार मोशात लमकांग, सेना मेडल**
8 असम (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 05 फरवरी, 2004)

सूबेदार मोशात लमकांग ने प्रतिकूल मौसम में त्राछ जंगलों में कार्य करने की इच्छा व्यक्त की। 05 फरवरी, 2004 को 1100 बजे सैन्य दल 20 मीटर की दूरी से भूमिगत ठिकाने से की गई भारी गोलीबारी की चपेट में आ गया। वे इस गोलीबारी को निष्क्रिय करने के लिए बाजू से निकलकर घेराबंदी-दल के पास पहुंचे। आगे बढ़ते समय उन्होंने एक सशस्त्र आतंकवादी को अपने करीब देखा जो उनसे भिड़ गया। अत्यधिक फुर्ती दिखाते हुए सूबेदार मोशात लमकांग ने उस आतंकवादी को मार डाला। इसी बीच, दो आतंकवादियों ने अन्य गुप्त ठिकाने से गोलियां चला दीं जिससे उनके कंधे और सीने में गंभीर चोटें आईं। अपने साथियों के लिए गंभीर खतरे को भांपते हुए सूबेदार मोशात अपनी सुरक्षा तथा पीड़ा की परवाह किए बिना शत्रु पर टूट पड़े और आमने-सामने की मुठभेड़ में दोनों आतंकवादियों को मार डाला। सूबेदार मोशात जख्मी होने के बावजूद, दृढ़-निश्चय के साथ गुप्त ठिकाने पर गोलियां बरसाते रहे और सुरक्षित स्थान, जहां वे अपने जख्मों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए, पर पहुंचाए जाने तक आतंकवादियों को भागने नहीं दिया। उनकी इस कार्रवाई से नौ विदेशी आतंकवादियों को मारकर यह आपरेशन सफल हुआ।

सूबेदार मोशात लमकांग, सेना मेडल आतंकवादियों का मुकाबला करने में निडर पहलशक्ति, उत्कृष्ट वीरतापूर्ण कार्य का प्रदर्शन किया तथा सर्वोच्च बलिदान दिया।

33. **15307458 हवलदार एस.सामी कानन**
4 आसूचना कोर तथा एफ एस कंपनी (मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तारीख : 01 अप्रैल, 2004)

01 अप्रैल, 2004 को लगभग 1700 बजे कारगर आसूचना की जाल बिछाने में हवलदार एस. सामी कानन के लम्बे प्रयासों की सफलता के रूप में उन्होंने पूर्वी सेक्टर में तीन दुर्दांत आतंकवादियों की गतिविधियों के बारे में विशिष्ट सूचना प्राप्त की।

सैन्य टुकड़ियों को एकत्र करने में समय गंवाए बिना हवलदार एस. सामी कानन दो अन्य रैंकों के साथ सूचित स्थान की ओर दौड़े और अन्य दल को भी पीछे-पीछे आने के लिए कहा। उस स्थान पर पहुंचकर हवलदार एस. सामी कानन ने तीन संदिग्ध व्यक्तियों को देखा। यद्यपि ठीक-ठीक संख्या की जानकारी न होने पर भी हवलदार एस. सामी कानन ने उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए ललकारा। इसी बीच, अन्य सैन्य-दल भी वहां पहुंच गया। ललकारे जाने पर एक आतंकवादी ने पिस्तौल निकाल ली। हवलदार एस. सामी कानन ने अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना आतंकवादियों पर छलांग लगा दी और पिस्तौल छीन ली। इस गुत्थम-गुत्था की लड़ाई में आतंकवादियों ने एक हथगोला निकाल लिया और उसे शेष दल पर फेंकने की कोशिश की जो पीछे आ रहा था। अपने साथियों के प्रति खतरा भांपते हुए हवलदार एस. सामी कानन पुनः अडिग साहस का प्रदर्शन करते हुए और अपनी सुरक्षा की तनिक भी परवाह न करते हुए हथगोला छीनने के लिए आतंकवादियों से हाथा-पाई करने लगे। हवलदार एस. सामी कानन हथगोला फेंकने वाले आतंकवादियों को दबोच लिया, किंतु हथगोले के विस्फोट का अधिकतम धमाका उन्हें झेलना पड़ा और वे जख्मों के कारण वीरगति को प्राप्त हो गए।

हवलदार एस. सामी कानन ने आतंकवादियों की गोलीबारी का सामना करने में उत्कृष्ट वीरता, अदम्य साहस का प्रदर्शन किया और अपने साथियों की जान बचाने में सर्वोच्च बलिदान दिया।

वरुण मित्रा

(बरुण मित्रा)
निदेशक

संख्या 129—प्रेज/2004 – राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनके असाधारण साहसपूर्ण कार्यों के लिए **"सेना मेडल/आर्मी मेडल—बार"** प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं:—.

1. आईसी-47833 मेजर सुखमिन्द्र सिंह, से.मे., तोपखाना, 45 राष्ट्रीय राइफल
2. आईसी-56055 कैप्टन राजेश्वर सिंह बजाड़, से.मे., राजपूत, 23 राष्ट्रीय राइफल
3. 9094166 लांस हवलदार फजल हुसैन, से.मे., 5 जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री

वरुण मित्रा

(बरुण मित्रा)
निदेशक

संख्या 130–प्रेज/2004 – राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनके असाधारण साहसपूर्ण कार्यों के लिए **"सेना मेडल/आर्मी मेडल"** प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते हैं:–

1. आईसी-43875 ले. कर्नल विजय मेहता, 11 जाट
2. आईसी-46501 मेजर सुजान सिंह कुलार, जाट, 45 राष्ट्रीय राइफल
3. आईसी-46926 मेजर विरेन्द्र सिंह, 12 ग्रेनेडियर
4. आईसी-49541 मेजर अर्जुन सेगन, 10 पैरा (स्पेशल फोर्स)
5. आईसी-50008 मेजर संजय प्रकाश सिन्हा, 7 राजपूताना राइफल
6. आईसी-50035 मेजर आलोक माथुर, इंजीनियर/85 सड़क निर्माण कम्पनी (मरणोपरांत)
7. आईसी-50145 मेजर राजेन्द्र सिंह, 28 मद्रास
8. आईसी-50781 मेजर राजेश सेठी, 4 जाट
9. आईसी-50961 मेजर अमीत कबथियाल, 16 गढ़वाल राइफल
10. आईसी-51313 मेजर जगदीप सिंह मान, तोपखाना, 2/3 डेट ई सी एल यू
11. आईसी-51520 मेजर ऋषिकेश भालचन्द्र ग्रामोपाध्य, 11 मराठा लाइट इन्फैंट्री
12. आईसी-51745 मेजर अजीत सिंह यादव, तोपखाना, 52 राष्ट्रीय राइफल
13. आईसी-52728 मेजर विकास सलाथिया, जम्मू-कश्मीर राइफल, 3 राष्ट्रीय राइफल
14. आईसी-52966 मेजर मनदीप सिंह, 16 गढ़वाल राइफल
15. आईसी-53143 मेजर नवनीत वत्स, 3 गोरखा राइफल, 32 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)
16. आईसी-53657 मेजर नीलेश आनंन्द पगुल्वार, 8 असम
17. आईसी-54058 मेजर जितेन्द्र सिंह राठौड़, कवचित कोर, 28 असम राइफल
18. आईसी-54425 मेजर निखिल गणपती, कवचित कोर, 35 राष्ट्रीय राइफल

19. आईसी-54495 मेजर कुन्दन शर्मा, जम्मू-कश्मीर राइफल, 28 राष्ट्रीय राइफल
20. आईसी-54913 मेजर फजलुद्दीन जलाल, इंजीनियर, 1 राष्ट्रीय राइफल
21. आईसी-55261 मेजर सुनील रैना, 12 जम्मू-कश्मीर राइफल
22. आईसी-55458 मेजर कृष्ण सिंह बधवार, राजपूत, 23 राष्ट्रीय राइफल
23. आईसी-55561 मेजर पंकज कांत खण्डूरी, जाट, 5 राष्ट्रीय राइफल
24. आईसी-55807 मेजर शब्बारुल हसन, तोपखाना, 14 फील्ड रेजीमेंट
25. आईसी-56002 मेजर जयशंकर चौधरी, 8 असम
26. आईसी-56031 मेजर अजय सिंह, कवचित कोर, 3 लद्दाख स्काऊट
27. आईसी-57133 मेजर पवन पाल सिंह, महार, 51 राष्ट्रीय राइफल
28. आईसी-57774 मेजर सरजीत यादव, वायु रक्षा तोपखाना, 17 राष्ट्रीय राइफल
29. आईसी-58856 मेजर चन्द्रदेव सिंह सम्बयाल,12 जम्मू-कश्मीर राइफल
30. आईसी-59098 मेजर आदित्य सिंह, 7 राजपूताना राइफल
31. आईसी-60247 मेजर समीर बी गुजर, 19 गढ़वाल राइफल
32. आईसी 60283 मेजर अमीत डोगरा, 5 पैरा
33. आई सी-60597 मेजर सचिन जैन, 18 मराठा लाइट इन्फैंट्री
34. एसएस-37136 मेजर जोसांगलिआना हौलंगो, 5/3 गोरखा राइफल
35. आरसी-1123 मेजर प्यार सिंह अत्री, 18 जम्मू-कश्मीर राइफल
36. आईसी-54116 कैप्टन पथियेरी सुनील कुमार, मैक इन्फैंट्री, 28 असम राइफल
37. आईसी-55938 कैप्टन बी श्याम विजय सिम्हा, सेना सेवा कोर, 31 राष्ट्रीय राइफल
38. आईसी-56817 कैप्टन जितेश भुटानी, आर्मड, 31 सी आई यूनिट (मरणोपरांत)
39. आईसी-59382 कैप्टन मृदुल शर्मा, वायु रक्षा तोपखाना, 51 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)
40. आईसी- 59659 कैप्टन हरीश रमन, तोपखाना, 13 राष्ट्रीय राइफल
41. आईसी-59696 कैप्टन अमित अशोक कुमार वर्मा, तोपखाना, 15 राष्ट्रीय राइफल
42. आईसी-61151 कैप्टन अरिन्दम घोष, 7 राजपूताना राइफल
43. आईसी-61772 कैप्टन हर्ष कुमार झा, 10 जम्मू-कश्मीर राइफल
44. आईसी-61904 कैप्टन विजय सिंह रावत, सेना सेवा कोर, 11 राजपूताना राइफल
45. एसएस-38072 कैप्टन संजीव वाजपेयी, मराठा लाईट इन्फैंट्री 17 राष्ट्रीय राइफल
46. एसएस-38074 कैप्टन अजय सिंह राणा, तोपखाना, 60 फील्ड रेजीमेंट (मरणोपरांत)
47. एसएस-38437 कैप्टन प्रसाद संतोष कृष्ण, तोपखाना, 22 आसाम राइफल

48. एसएस-38678 कैप्टन प्रदीप शर्मा, इंजीनियर, 19 राष्ट्रीय राइफल
49. आईसी-60224 लेप्टिनेंट सचिन वाकन्कर, तोपखाना, 22 स्पेशल फोर्स
50. आईसी-60659 लेप्टिनेंट दीपक सिंह पटवाल, 12 ग्रेनेडियर
51. आईसी-61069 लेप्टिनेंट मुश्ताक अहमद खान, 19 जम्मू-कश्मीर राइफल
52. आईसी-61418 लेप्टिनेंट मूप्पती संजीव, 21 जाट रेजीमेंट
53. आईसी-61490 लेप्टिनेंट प्रशांत शान्ताप्पा अप्पाजी, सिग्नल, 45 राष्ट्रीय राइफल
54. आईसी-61515 लेप्टिनेंट इन्द्र पाल सिंह, 19 जम्मू-कश्मीर राइफल
55. आईसी-61903 लेप्टिनेंट सशांक त्रिपाठी, 237 इंजीनियर रेजीमेंट
56. आईसी- 62201 लेप्टिनेंट राकेश मदान, सेना आयुध कोर,2 जाट
57. आईसी-62246 लेप्टिनेंट विशेष अरोड़ा, 15 जम्मू-कश्मीर राइफल
58. आईसी-62675 लेप्टिनेंट जोगेन्द्र सिंह, 4 ग्रेनेडियर
59. आईसी-62719 लेप्टिनेंट अंकुर वशिष्ठ, 7 सिख रेजीमेंट
60. आईसी-62721 लेप्टिनेंट श्रीकांत रामाचन्द्रन, 14 जाट रेजीमेंट
61. आईसी-62871 लेप्टिनेंट पंकज कुमार अरोरा, 18 मराठा लाइट इन्फैंट्री (मरणोपरांत)
62. एसएस-39488 लेप्टिनेंट पवनमीत बरार, 18 जम्मू-कश्मीर राइफल
63. एसएस-39543 लेप्टिनेंट नितिन हरिराम, 9 जाट रेजीमेंट
64. एसएस-39789 लेप्टिनेंट रविन्दर सैनी, 11 सिख रेजीमेंट
65. जेसी-185490 सूबेदार अनुराग चन्द्रा सिंह, ग्रेनेडियर, 29 राष्ट्रीय राइफल
66. जेसी-212626 सूबेदार गुरबचन सिंह, 3 सिख रेजीमेंट
67. जेसी-260278 सूबेदार सुरेश कुमार यादव, तोपखाना, 30 राष्ट्रीय राइफल
68. जेसी-418265 सूबेदार रमेश कुमार, मैकानाइज्ड इन्फैंट्री, 16 राष्ट्रीय राइफल
69. जेसी-428754 सूबेदार ध्यान सिंह, 13 पंजाब (मरणोंपरांत)
70. जेसी-458629 सूबेदार शंकर गणपती देवकते, मराठा लाईट इन्फैंट्री, 41 राष्ट्रीय राइफल
71. जेसी-468534 सूबेदार धर्मपाल सिंह, 7 राजपूताना राइफल
72. जेसी-488149 सूबेदार भूरा राम, जाट, 5 राष्ट्रीय राइफल
73. जेसी-488829 सूबेदार अलबेल सिंह, 21 जाट रेजीमेंट
74. जेसी-568596 सूबेदार खेम सिंह, महार, 1 राष्ट्रीय राइफल
75. जेसी-579027 सूबेदार दौलत राम, 8 जम्मू-कश्मीर राइफल
76. जेसी-592599 सूबेदार अली मोहम्मद, जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री, 51 राष्ट्रीय राइफल

77. जेसी-623247 सूबेदार राम बहादुर रोका, 5/8 गोरखा राइफल

78. जेसी-260848 नायब सूबेदार सुल्तान सिंह राठौड़, तोपखाना, 45 राष्ट्रीय राइफल

79. जेसी-261937 नायब सूबेदार धरम सिंह, तोपखाना, 17 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

80 जेसी-449270 नायब सूबेदार अक्बाल अहमद खान, ग्रेनेडियर, 29 राष्ट्रीय राइफल

81. जेसी-459193 नायब सूबेदार शेख अकबर, 11 मराठा लाईट इन्फैंट्री (मरणोपरांत)

82. जेसी-479180 नायब सूबेदार प्रभु सिंह, 3 राजपूत (मरणोपरांत)

83. जेसी-479183 नायब सूबेदार भरत सिंह गुर्जर, 3 राजपूत

84. जेसी-529342 नायब सूबेदार दिवान सिंह, 12 गढ़वाल राइफल (मरणोपरांत)

85. जेसी-568962 नायब सूबेदार धर्मवीर, 6 महार रेजीमेंट (मरणोपरांत)

86. जेसी-569230 नायब सूबेदार सत्यपाल, 6 महार रेजीमेंट

87. जेसी-578636 नायब सूबेदार गोपाल सिंह सैनी, 12 जम्मू-कश्मीर राइफल

88. जेसी-579139 नायब सूबेदार पुकार लामा, 19 जम्मू-कश्मीर राइफल

89. जेसी-592818 नायब सूबेदार रमेश चन्द्र, जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री, 8 राष्ट्रीय राइफल

90. जेसी-602459 नायब सूबेदार गिरीमन राणा, 1 गोरखा राइफल, 15 राष्ट्रीय राइफल

91. 2481183 हवलदार भूपिन्दर सिंह, 9 पैरा (स्पेशल फोर्स)

92. 2785147 हवलदार रामाप्पा मिरजी, 18 मराठा लाइट इन्फैंट्री (मरणोपरांत)

93. 2879822 हवलदार सुमेर सिंह, 11 राजपूताना राइफल

94. 3179371 हवलदार हरपाल सिंह, 9 जाट रेजीमेंट

95. 3990159 हवलदार प्रताप सिंह, 21 राजपूताना राइफल

96. 4061578 हवलदार शिशु पाल सिंह, 16 गढ़वाल राइफल

97. 4065809 हवलदार डबल सिंह, 16 गढ़वाल राइफल

98. 4069249 हवलदार त्रिलोक सिंह, गढ़वाल राइफल, 36 राष्ट्रीय राइफल

99. 4358576 हवलदार रामधन बोरो, 6 असम (मरणोपरांत)

100. 5846960 हवलदार केश बहादुर क्षेत्री, 2/9 गोरखा राइफल

101. 9087364 हवलदार मन्जूर अहमद, जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री, 23 राष्ट्रीय राइफल

102. 13615174 हवलदार बद्री प्रसाद, 10 पैरा (स्पेशल फोर्स)

103. 13617884 हवलदार विनोद जनारधनन, मद्रास, 8 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

104. 13747720 हवलदार जसवंत सिंह, जम्मू-कश्मीर राइफल, 28 राष्ट्रीय राइफल

105. 13748070 हवलदार विनोद कुमार, 15 जम्मू-कश्मीर राइफल

106. 13748908 हवलदार रशपाल सिंह, 15 जम्मू-कश्मीर राइफल

107. 13749857 हवलदार सुनील दत्त, 19 जम्मू-कश्मीर राइफल

108. 14701203 हवलदार गोपाल सिंह, 8 कुमाऊँ

109. 3181604 लांस हवलदार बाबू राम, 2 जाट रेजीमेंट (मरणोपरांत)

110. 3184298 लांस हवलदार भरत सिंह, 21 जाट रेजीमेंट

111. 7242115 लांस दफादार स्वप्न बेरा, आर वी सी, 33 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

112. 2890033 नायक नरेश सिंह, 7 राजपूताना राइफल

113. 2891596 नायक राम लखन सिंह, 20 राजपूताना राइफल (मरणोपरांत)

114. 3185329 नायक हरदित सिंह, 8 जाट रेजीमेंट

115. 3993033 नायक सुदेश कुमार, 9 पैरा (स्पेशल फोर्स) (मरणोपरांत)

116. 4071156 नायक महिपाल सिंह, 16 गढ़वाल राइफल

117. 4071251 नायक रघुबीर सिंह बर्तवाल, 7 गढ़वाल राइफल (मरणोपरांत)

118. 4072135 नायक अतुल सिंह पँवार, 16 गढ़वाल राइफल

119. 4183862 नायक नन्दन सिंह मेहरा, 21 कुमाऊँ (मरणोपरांत)

120. 5247235 नायक टिका राम सिंजाली थापा, 5/3 गोखा राइफल

121. 5752722 नायक राजू गुरूंग, 5/8 गोरखा राइफल

122. 13619048 नायक जोगेन्द्रा सिंह, 5 पैरा (मरणोपरांत)

123. 13751467 नायक बिशन लाल, जम्मू-कश्मीर राइफल, 28 राष्ट्रीय राइफल

124. 13753453 नायक दरबार सिंह, जम्मू-कश्मीर राइफल, 52 राष्ट्रीय राइफल

125. 13755631 नायक गुरबचन सिंह, 10 जम्मू-कश्मीर राइफल

126. 13755679 नायक अमरीक सिंह, 18 जम्मू-कश्मीर राइफल

127. 15763964 नायक पिन्टू घोष, वायु रक्षा तोपखाना, 23 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

128. 15768443 नायक अमरनाथ चतुर्वेदी, वायु रक्षा तोपखाना, 15 राष्ट्रीय राइफल

129. 2484468 लांस नायक कुलदीप सिंह, पंजाब, 22 राष्ट्रीय राइफल

130. 2485458 लांस नायक रणधीर सिंह, 24 पंजाब

131. 2689993 लांस नायक डुन्गर सिंह, ग्रेनेडियर, 12 राष्ट्रीय राइफल

132. 2891839 लांस नायक चन्द्र भान सिंह, राजपूताना राइफल, 9 राष्ट्रीय राइफल

133. 2994892 लांस नायक गणपत सिंह राठौड़, 3 राजपूत (मरणोपरांत)

134. 3187823 लांस नायक यज्ञ दत्त, 21 जाट रेजीमेंट

135. 3188780 लांस नायक जगदीश प्रसाद धिनवा, 14 जाट (मरणोपरांत)

136. 3398382 लांस नायक निरपाल सिंह, 5 सिख

137. 4073603 लांस नायक गब्बर सिंह, 10 पैरा (स्पेशल फोर्स)

138. 4567755 लांस नायक जीत सिंह, महार, 1 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

139. 9097172 लांस नायक राम लाल, 12 जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री (मरणोपरांत)

140. 13756412 लांस नायक रवि कुमार, जम्मू-कश्मीर राइफल, 31 राष्ट्रीय राइफल

141. 13759437 लांस नायक मनोहर लाल, 8 जम्मू-कश्मीर राइफल (मरणोपरांत)

142. 14403608 लांस नायक सुशील कुमार, तोपखाना, 60 फील्ड रेजीमेंट (मरणोपरांत)

143. 15373301 लांस नायक अतनु माइती, सिगनल, 44 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

144. 15764578 लांस नायक सत्य प्रकाश सिंह, वायु रक्षा तोपखाना, 23 राष्ट्रीय राइफल

145. 15772259 लांस नायक अजय कुमार, वायु रक्षा तोपखाना, 25 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

146. 2492263 सिपाही बलविन्द्र सिंह, 16 पंजाब

147. 2494250 सिपाही जसवंत सिंह, 25 पंजाब

148. 2795407 सिपाही कल्लप्पा भद्रसेट्टी, मराठा लाइट इन्फैंट्री, 41 राष्ट्रीय राइफल

149. 2799112 सिपाही सिद्धाप्पाजी एल, 18 मराठा लाइट इन्फैंट्री

150. 2994600 सिपाही शौकत हुसैन, राजपूत, 10 राष्ट्रीय राइफल

151. 2997233 सिपाही संजीव कुमार, 3 राजपूत रेजीमेंट (मरणोपरांत)

152. 3005715 सिपाही प्रदीप कुमार, 3 राजपूत (मरणोपरांत)

153. 3187717 सिपाही राकेश कुमार, 2 जाट (मरणोपरांत)

154. 3190749 सिपाही अनिल कुमार, जाट, 34 राष्ट्रीय राइफल

155. 3192978 सिपाही प्रवीन कुमार, 9 जाट रेजीमेंट

156. 3398332 सिपाही सुरजीत सिंह, सिख, 6 राष्ट्रीय राइफल

157. 3398722 सिपाही रणजीत सिंह, सिख, 16 राष्ट्रीय राइफल

158. 3401837 सिपाही रूप सिंह, सिख, 16 राष्ट्रीय राइफल

159. 3402475 सिपाही रणजीत सिंह, सिख, 6 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)

160. 3995704 सिपाही देश राज, डोगरा, 11 राष्ट्रीय राइफल

161. 3998284 सिपाही गुलशन मेहता, डोगरा, 11 राष्ट्रीय राइफल

162. 4000643 सिपाही देविन्दर सिंह, डोगरा, 11 राष्ट्रीय राइफल

163. 4195178 सिपाही हरीश चन्द्रा कांपड़ी, 3 कुमाऊँ (मरणोपरांत)
164. 4365533 सिपाही आथिसी डाइखो माओ, 6 असम
165. 4366827 सिपाही मओअलोंग आओ, 8 असम
166. 4368275 सिपाही लेत्जाथांग, 10 असम
167. 4477559 सिपाही रामपाल सिंह, सिख लाइट इन्फैंट्री, 19 राष्ट्रीय राइफल
168. 4569833 सिपाही राजिन्दर, महार, 1 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)
169. 4571219 सिपाही लखविन्द्र सिंह, 14 महार (मरणोपरांत)
170. 4572860 सिपाही प्रवीण कुमार, 6 महार रेजीमेंट (मरणोपरांत)
171. 4572926 सिपाही रमेश कुमार, 6 महार रेजीमेंट (मरणोपरांत)
172. 9927096 सिपाही ताशी नमग्याल, 3 लद्दाख स्काउट
173. 14925910 सिपाही जय सिंग बोरो, मैकानाइज्ड इन्फैंट्री, 50 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)
174. 13762652 राइफलमैन सूरज प्रकाश, 15 जम्मू-कश्मीर राइफल
175. 2201027 राइफलमैन अर्जुन बहादुर छेत्री, 22 असम राइफल
176. 2894421 राइफलमैन ब्रजेश सिंह, राजपूताना राइफल, 43 राष्ट्रीय राइफल (मरणोपरांत)
177. 2895178 राइफलमैन मनोज कुमार, राजपूताना राइफल, 18 राष्ट्रीय राइफल
178. 5755420 राइफलमैन निर्मल थापा, 5/8 गोरखा राइफल
179. 9098967 राइफलमैन बशीर अहमद लोन, 12 जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री (मरणोपरांत)
180. 9099251 राइफलमैन जसपाल सिंह, 13 जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री (मरणोपरांत)
181. 9107357 राइफलमैन स्वर्ण सिंह, 11 जम्मू-कश्मीर लाइट इन्फैंट्री
182. 9423465 राइफलमैन मोहन थापा, 3/11 गोरखा राइफल
183. 13757057 राइफलमैन रणजीत सिंह, 15 जम्मू-कश्मीर राइफल
184. 13759740 राइफलमैन सुभाष चन्द, जम्मू-कश्मीर राइफल, 3 राष्ट्रीय राइफल
185. 13759937 राइफलमैन प्रदीप सिंह, जम्मू-कश्मीर राइफल, 31 राष्ट्रीय राइफल
186. 13762168 राइफलमैन संजय कुमार, 18 जम्मू-कश्मीर राइफल
187. 13762526 राइफलमैन अनिल कुमार, जम्मू-कश्मीर राइफल, 28 राष्ट्रीय राइफल
188. 1494948 सैपर गुरमेल सिंह, इंजीनियर, 36 राष्ट्रीय राइफल
189. 1584995 सैपर विजय संतोष पाटील, इंजीनियर, 47 राष्ट्रीय राइफल
190. 15564198 सैपर राजीन्दर सिंह, 113 इंजीनियर रेजीमेंट
191. 13623703 पैराट्रूपर प्रदीप कुमार, पैरा, 31 राष्ट्रीय राइफल

192. 13623883 पैराट्रूपर नाहर सिंह, 10 पैरा (स्पेशल फोर्स) (मरणोपरांत)

193. 13624159 पैराट्रूपर सुदेश, 10 पैरा (स्पेशल फोर्स)

194. 14427896 गन्नर बलप्पा मरेड संकप्पा, तोपखाना, 17 राष्ट्रीय राइफल

195. 14428971 गन्नर जे माधवन, तोपखाना, 28 राष्ट्रीय राइफल

196. 14429897 गन्नर गुरतार सिंह, तोपखाना, 28 राष्ट्रीय राइफल

197. 15138674 गन्नर अबनेश कुमार शर्मा, तोपखाना, 36 राष्ट्रीय राइफल

198. 15138970 गन्नर रामणीक कुमार, तोपखाना, 17 राष्ट्रीय राइफल

199. 15152795 गन्नर विजय कुमार द्विवेदी, तोपखाना, 281 फील्ड रेजीमेंट

200. 15397836 सिगनलमैन राजीव आर नायर, सिगनल, 10 राष्ट्रीय राइफल

(बरूण मित्रा)
निदेशक

संख्या 131–प्रेज/2004 – राष्ट्रपति निम्नलिखित कार्मिकों को उनके असाधारण साहसपूर्ण कार्यों के लिए **"वायुसेना मेडल/एयर फोर्स मेडल"** प्रदान किए जाने का अनुमोदन करते है:–

1. विंग कमांडर मुकेश रावत (17453), उड़ान (पायलट)
2. स्क्वाड्रन लीडर रकशाले संजीव कुमार (19037), एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग (इलैक्ट्रॉनिक्स)
3. फ्लाइट लेफ्टिनेंट नवीन मारनथ नायर (24035), उड़ान (पायलट)
4. फ्लाइट लेफ्टिनेंट मयंगलम्बम मनि मोहन सिंह (24229), उड़ान (पायलट)

(बरूण मित्रा)
निदेशक

मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग)
यूनेस्को यूनिट

नई दिल्ली, दिनांक 27 अक्तूबर 2004

संकल्प

सं. एफ 27-25/2001-यू.यू.--

ओरोविले फाउंडेशन अधिनियम, 1988 के अध्याय III के खंड 21 के उप खंड (1) के अनुसार भारत सरकार ओरोविले अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार परिषद का पुनर्गठन इस प्रकार करती है :-

1. डा0 ए.टी. अरियारत्ने
प्रतिष्ठान अध्यक्ष,
सर्वोदय समाधान मूवमेंट ऑफ श्रीलंका,
मोस्तूवा।

2. सर मार्क तुली,
1 (भूतल), निजामुद्दीन ईस्ट,
नई दिल्ली

3. प्रो0 डाएना इक
हारवार्ड विश्वविद्यालय
हारवार्ड, यू0एस0ए0

4. श्री डुओडुओ ठिइने
8, रयू लिओन वाउडोयर 75007,
पेरिस, फ्रांस

5. डा0-मार्क लुयकस घीसी,
सेलूल्ल द प्रोस्पेक्टिव यूरोपियन
स्पारनवेग, 10,
बी-3051 सिंट जोरिस वीर्ट,
बेल्जियम

2. परिषद के अध्यक्ष को परिषद के सदस्यों द्वारा उनमें से ही चुना जाएगा।

3. सदस्यों का कार्यकाल संकल्प की तिथि से 4 वर्ष के लिए होगा। सदस्य अवैतनिक आधार पर कार्य करेंगे।

4. सचिव, ओरोविल प्रतिष्ठान, अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार परिषद का पदेन सचिव होगा।

5. दिनांक 31 मई, 2004 के समसंख्यक संकल्प के द्वारा घोषित अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार परिषद, ओरोविल प्रतिष्ठान को नए संकल्प के जारी किए जाने के साथ समाप्त कर दिया जाता है।

आदेश

संकल्प को आम सूचना हेतु भारत के राजपत्र में प्रकाशित करने का आदेश दिया जाता है।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक प्रति सभी सम्बन्धितों तथा सचिव, ओरोविल प्रतिष्ठान, जिला विल्लुपुरम, तमिलनाडु और प्रमुख सचिव, तमिलनाडु सरकार को भी भेजी जाए।

(च. बाल कृष्णन)
संयुक्त सचिव

नागर विमानन मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 28 अक्तूबर 2004

संकल्प

संख्या-ई.11011/4/2004-रा.भा., भारत सरकार ने नागर विमानन मंत्रालय के लिए हिन्दी सलाहकार समिति का पुनर्गठन करने का निर्णय लिया है। समिति का गठन, कार्य आदि निम्नलिखित होंगे:-

गठन

1.	नागर विमानन मंत्री	--	अध्यक्ष

सरकारी सदस्य

1.	सचिव, नागर विमानन	--	सदस्य
2.	सचिव, राजभाषा विभाग एवं भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार	--	सदस्य
3.	राजभाषा विभाग का प्रतिनिधि	--	सदस्य
4.	संयुक्त सचिव एवं वित्त सलाहकार, नागर विमानन मंत्रालय	--	सदस्य
5.	संयुक्त सचिव (एन)	--	सदस्य
6.	संयुक्त सचिव (एम)	--	सदस्य
7.	संयुक्त सचिव (यू) **(यदि किन्हीं अपरिहार्य प्रशासनिक कारणों से संयुक्त सचिव बैठक में भाग लेने में असमर्थ हों तो उनके अधीन कार्यरत निदेशक/उप सचिव बैठक में भाग लेंगे)**	--	सदस्य
8.	महा निदेशक, नागर विमानन महानिदेशालय	--	सदस्य
9.	आयुक्त, नागर विमानन सुरक्षा ब्यूरो	--	सदस्य
10.	मुख्य रेल संरक्षा आयुक्त, रेल संरक्षा आयोग, लखनऊ	--	सदस्य
11.	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, एअर इंडिया लिमि.	--	सदस्य
12.	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इंडियन एयरलाइंस लिमि.	--	सदस्य
13.	अध्यक्ष, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण	--	सदस्य
14.	प्रबंध निदेशक, एलाइंस एयर	--	सदस्य
15.	प्रबंध निदेशक, भारतीय होटल निगम	--	सदस्य
16.	अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, पवन हंस हेलीकॉप्टर्स लिमि.	--	सदस्य
17.	निदेशक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय उड़ान अकादमी	--	सदस्य

गैर सरकारी सदस्य

संसदीय कार्य मंत्रालय द्वारा नामित सदस्य

18. **श्री अश्वनी कुमार,** सदस्य
संसद सदस्य, राज्य सभा,
171-नार्थ एवेन्यू,
नई दिल्ली- 110 001.

19. **श्री राम नाथ कोविंद,** सदस्य
संसद सदस्य, राज्य सभा,
53-55, साउथ एवेन्यू,
नई दिल्ली-110 011.

20. **कुँवर जितिन प्रसाद,** सदस्य
संसद सदस्य, लोक सभा,
ए-9, अमृता शेरगिल मार्ग,
नई दिल्ली

21. **श्री रामाकान्त यादव,** सदस्य
संसद सदस्य, लोक सभा
2-ए, तालकटोरा रोड,
नई दिल्ली

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा नामित सदस्य

22. **श्रीमती सरला माहेश्वरी,** सदस्य
संसद सदस्य, राज्य सभा,
18, विंडसर प्लेस,
नई दिल्ली- 110 001.

23. **कुँवर सर्वराज सिंह,** सदस्य
संसद सदस्य, लोक सभा,
52, नॉर्थ एवेन्यू,
नई दिल्ली.

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद द्वारा नामित सदस्य

24. डॉ. कृष्ण कुमार ग्रोवर, सदस्य
एफ.बी.-16, टैगोर गार्डन,
नई दिल्ली-110 092

अखिल भारतीय स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा नामित सदस्य (राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा)

25. प्रो. अनन्त राम त्रिपाठी, सदस्य
प्रधानमंत्री, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
ए/203 आशिका अपार्टमेण्ट्स, शास्त्री नगर रोड,
कलवा (पश्चिम), ठाणे-400 605, महाराष्ट्र

नागर विमानन मंत्रालय द्वारा नामित सदस्य

26. **श्री शीलेश शर्मा,** सदस्य
बी-82, सेक्टर-36
नोएडा-201 301.उ0प्र0

27. **श्री अनुज गुप्ता** सदस्य
अर्चना निवास,
मकान नं. 88, सेक्टर-6,
वैशाली, गाजियाबाद, उ0प्र0

28. **डॉ0 कुमुद शर्मा,** सदस्य
एफ9/जी, डी.डी.ए. फ्लैट्स,
मुनीरका, नई दिल्ली-110 067

29. **श्री विवेक सक्सेना,** सदस्य
ए-63, पंडारा रोड,
नई दिल्ली-110 003

राजभाषा विभाग द्वारा नामित सदस्य

30. **श्री हकीम अनीस-उर-रहमान,** सदस्य
1516-18, डेविड स्ट्रीट,
प्रथम तल, पटौदी हाउस,
दरियागंज, नई दिल्ली.

31. **डॉ. शिवगोपाल मिश्र,** सदस्य
प्रधान मंत्री, विज्ञान परिषद प्रयाग,
महर्षि दयानंद मार्ग,
इलाहाबाद-211 002.

32. **डॉ. लीला ज्योति,** सदस्य
409, इंद्रलोक काम्प्लैक्स,
रोड नं. 1, बंजारा हिल्स,
हैदराबाद- 500 034.

सदस्य-सचिव

33. मंत्रालय में निदेशक (राजभाषा) सदस्य-सचिव

समिति के कार्य

इस समिति का कार्य संविधान में राजभाषा संबंधी प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम/नियमों के उपबंधों, केन्द्रीय हिन्दी समिति के निर्णयों तथा गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा जारी निदेशों के कार्यान्वयन के बारे में नागर विमानन मंत्रालय के कामकाज में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने के लिए सलाह देना है।

कार्यकाल

समिति के सदस्यों का कार्यकाल सामान्य रूप से समिति के गठन सम्बन्धी संकल्प के जारी होने की तारीख से तीन वर्ष होगा, बशर्ते कि:-

(1) जो संसद सदस्य हैं वे संसद सदस्य न रहने पर इस समिति के सदस्य नहीं रहेंगे
(2) समिति के पदेन सदस्य अपने पद पर कार्य करते रहने तक ही इस समिति के सदस्य रहेंगे।
(3) यदि किसी सदस्य की मृत्यु हो जाने के कारण अथवा समिति की सदस्यता से त्यागपत्र दे देने के कारण स्थान खाली होता है, तो उस स्थान पर नियुक्त सदस्य तीन वर्ष के कार्यकाल की शेष अवधि के लिए ही सदस्य होगा

भत्ते

गैर सरकारी सदस्यों को समिति की बैठकों में भाग लेने के लिए भारत सरकार द्वारा समय-समय पर निर्धारित दरों पर यात्रा तथा दैनिक भत्ते दिए जायेंगे।

मुख्यालय

समिति का मुख्यालय दिल्ली में होगा, किन्तु समिति अपनी बैठकें आवश्यकता पड़ने पर, किसी अन्य स्थान पर भी कर सकती है।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रति समिति के सभी सदस्यों, सभी राज्य सरकारों और संघ राज्य क्षेत्र प्रशासनों, प्रधान मंत्री कार्यालय, मंत्रिमण्डल सचिवालय, राष्ट्रपति सचिवालय, संसदीय राजभाषा समिति, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षण, केन्द्रीय राजस्व के महालेखाकार, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय तथा भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों को भेजी जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प आम जानकारी के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

नसीम ज़ैदी

(डा0 नसीम ज़ैदी)
संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th August 2004

New Delhi, the 15th August, 2004

No.127–Pres/2004 - The President is pleased to approve the award of the **"Kirti Chakra"** to the undermentioned personnel for the acts of conspicuous gallantry:-

1. SHRI NARINDRA NATH DHAR DUBEY, SECOND-IN-COMMAND BORDER SECURITY FORCE

(Effective date of the award: **30 Aug 2003**)

On 30th August 2003, on the basis of specific information regarding presence of a hardcore terrorist Rana Tahir Nadeem *alias* Gazi Baba, Chief Operational Commander of J-e-M in a house in Noorbagh(Srinagar), a search & cordon operation was launched by Border Security Force. Shri Narindra Nath Dhar Dubey along with other officers/personnel entered into the building by breaking down the door of the house. The ground & first floor of the house were searched. On reaching the second floor of the house, it was found vacant. However, Shri Dubey got suspicions on noticing two wardrobes which were placed in the room in peculiar manner. He instructed the personnel to take cover and hit the mirror fixed on the wardrobe. On the mirror being hit, a trap door swung open and the terrorists hiding therein opened heavy volume of fire and lobbed grenades. Shri Dubey along with Constable Balbir Singh sustained multiple bullet injuries. Despite injuries, both of them returned fire. One of the terrorists jumped out of the hiding place and was about to fire upon Shri Dubey at close range, when Constable Balbir Singh, in utter disregard to his own life, jumped in front of the officer. Constable Balbir Singh received the bullet in his abdomen and succumbed to injuries on the spot. Shri Dubey pounced on the terrorist and caught hold of his rifle. The terrorist drew a pistol and shot at Shri Dubey shattering his fore-arm and rushed out. Grievously injured and profusely bleeding, Shri Dubey ran after the terrorist and killed him on the spot. The dead terrorist was subsequently identified as the notorious Rana Tahir Nadeem *alias* Gazi Baba. Despite having sustained eight bullet injuries on his body and a shattered arm, Shri Dubey while being evacuated continued to guide and exhort his officers and men for the successful resolution of the on-going fire fight with the remaining terrorists. In the follow-up operation, another terrorist was also killed.

Shri Narindra Nath Dhar Dubey displayed conspicuous gallant action, raw courage, selflessness, stellar leadership qualities and showed exemplary devotion to duty, unmindful of his own safety while fighting the terrorists.

2. **IC-62214 LIEUTENANT KANAVDEEP SINGH**
10 SIKH (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **23 Sept 2003**)

Lieutenant Kanavdeep Singh along with a platoon was tasked to carryout search and destroy operations in Gurez Sector, Jammu & Kashmir. On 23 September 2003, a patrol party of Ladakh Scouts was ambushed by terrorists; two soldiers were injured while the others were trapped under heavy fire.

Lieutenant Kanavdeep Singh, realising the gravity of the situation, without awaiting for any orders, immediately diverted his platoon to rescue the trapped patrol. As his platoon closed in, they came under effective fire from a second group of terrorists, hiding in an inaccessible natural cave. Without regard for his personal safety the officer shot and killed one terrorist. Meanwhile he noticed that his rocket launcher detachment was unable to fire at the terrorists due to effective terrorists' fire. The Officer then moved towards the detachment but was wounded by terrorist fire. Despite being wounded, the officer crawled to the detachment and fired the Rocket Launcher killing the second terrorist in close combat and injuring the third. Due to excessive blood loss, the officer succumbed to his injuries.

Lieutenant Kanavdeep Singh displayed conspicuous bravery, exemplary courage, leadership in facing the terrorists and made the supreme sacrifice in the highest traditions of the Indian Army.

3. **IC-62671 LIEUTENANT DHEERENDRA SINGH ATRI, ASC**
3 RAJPUT (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **18 Oct 2003**)

Lieutenant Dheerendra Singh Atri laid an ambush in District Kupwara in Jammu & Kashmir on an infiltration route. On 18 October, 2003 at 0230 hours, ambush party opened fire on a suspected movement of terrorists. At first light, Lieutenant Atri led the search through dense forest. His party was fired upon by terrorists hiding in a nala. Lieutenant Atri reacted with such ferocity that not only he was able to kill two terrorists

but the complete group of terrorists also disintegrated. In the ensuing firefight, a splinter group of terrorist reached the shoulder of the nala from where they brought effective fire and seriously injured Lieutenant Atri. At this juncture, unmindful of his own injury and determination to prevent terrorists causing further harm to his party, Lieutenant Atri charged and fatally injured one more terrorist whose death was confirmed later, before succumbing to a fatal hit on his spine. Inspired by his gallant action, troops killed five more terrorists, thus, eliminating the entire group of terrorists. In this operation, a large number of arms, ammunition and currency notes were recovered.

Lieutenant Dheerendra Singh Atri displayed conspicuous bravery, raw courage and inspiring leadership in fighting terrorists and made the supreme sacrifice.

(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No.128–Pres/2004 - The President is pleased to approve the award of the **"Shaurya Chakra"** to the undermentioned personnel for the acts of gallantry:-

1. **MISS UDITA KARMAKAR**
JALPAIGURI, WEST BENGAL

(Effective date of the award: **12 March 2000**)

On 12 March 2000 evening, while the parents of Miss Udita Karmakar were away from home, four dacoits armed with pistols barged into their home and put a pistol on the head of Udita's sister. They demanded keys of almirahs. The dacoits moved from one room to another with some jewellery and other valuables. Udita followed them but the dacoits gave her a blow. When a dacoit attempted to tie Udita with a telephone wire, she gave a sharp bite on his finger. She then shouted saying that her father had gone to the next door and would be back very soon. Hearing this, the dacoits attempted to flee away but Udita got hold of one of them and shouted for help. The dacoit hit her with his pistol. She sustained wounds on her cheeks. In the meantime, a large crowd gathered there and overpowered the dacoit.

Miss Udita Karmakar acted bravely and confronted the armed dacoits, which led to the arrest of one of the dacoits.

2. **CONSTABLE K SUDARSHAN REDDY**
BORDER SECURITY FORCE (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **30 Sept 2002**)

On 30 September 2002, a party comprising of one subordinate officer and eighteen other ranks of R-3 BSF adhoc Battalion was assigned the duty of protecting polling booth No.17-A at Hassot-II (Chassana) under Gulabgarh constituency during the J&K Assembly Elections, 2002. At about 2200 hrs, on receipt of information regarding suspicious movement of some persons in village Chassana, the party commander went for patrolling the area leaving behind two constables including Constable Sudarshan Reddy for guarding the polling booth. Around midnight, Constable Sudarshan Reddy observed some persons, who were terrorists, approaching the booth and challenged them. The terrorists opened heavy fire on him. He quickly

retaliated the fire and informed his party commander. He engaged the militants till re-enforcement arrived. Without caring for his life and showing courage of the highest order, he crawled close to the terrorists and fired on them. In the exchange of fire, he sustained bullet injuries but continued firing upon the terrorists till he succumbed to his injuries. Meanwhile, reinforcement arrived, and the terrorists fled away. The gallant action and supreme sacrifice of Constable Sudarshan Reddy resulted in saving the lives of the polling staff and disturbance to the election process.

Constable K. Sudarshan Reddy displayed conspicuous gallant action, raw courage and sacrificed his life in performing the duty.

3. CODE No. 2788 SHRI SHIRING DORJEE, CASUAL PAID LABOUR BORDER ROAD ORGANISATION

(Effective date of the award: **15 Dec 2002**)

Shri Shiring Dorjee, CP Labour had been deployed as night sentry in the under construction hospital building at 17 Assam Rifles KLP Project at Keithlmanbi in Imphal District of Manipur State on the night of 15 December 2002.

The hospital building was storing costly construction material meant for incorporation in the project. At about 0030 hours on 15 December 2002, a group of 10 to 12 masked armed men tried to enter the building with an intention of theft. Shri Shiring Dorjee challenged them and tried to stop them by raising alarm and brandishing his "KHUKRI". The miscreants assaulted him but Shri Shiring Dorjee stood his ground and kept on raising alarm inspite of injuries sustained by him. Due to the timely call, Assam Rifles personnel deployed nearby came for help and the miscreants had to leave. This act of bravery by Shri Shiring Dorjee with utter disregard to personal safety resulted in the saving of costly stores.

Shri Shiring Dorjee displayed presence of mind, initiative, indomitable courage and dogged determination in the face of armed miscreants.

4. SHRI VIVEK SAXENA, ASSISTANT COMMANDANT BORDER SECURITY FORCE (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **08 Jan 2003**)

On the night intervening 8/9th January, 2003, on specific information regarding presence of terrorist(s) in village Sajik Tampak, District Chandel (Manipur), a company led by Assistant Commandant Vivek Saxena, 2nd Bn BSF cordoned off the village and a search operation was started. Suddenly, the terrorists opened heavy fire on them from the hilltop. Reacting swiftly, Shri Saxena mounted his LMGs (Light Machine Guns) and retaliated fire on the terrorists numbering about 250 in strength & equipped with

sophisticated automatic weapons. Though outnumbered and heavily under fire from the large number of terrorists, Shri Saxena did not lose heart and galvanized the available resources. With utter disregard to his personal safety, he ran from platoon to platoon and motivated the troops.

The encounter continued till dusk. Taking advantage of the fading light, the terrorists regrouped and launched a fierce onslaught on the right flank of the BSF party. Shri Saxena rallied his troops and effectively repulsed the thrust of the terrorists' attack. Through his sheer grit and courage, Shri Saxena managed to thwart the offensive launched by the terrorists. Shri Saxena crawled ahead & engaged the terrorists & gave covering fire to his troops in shifting to a safer place. His accurate firing killed three terrorists. In the process he fell to a hail of bullets fired by the terrorists & sacrificed his life fighting the terrorists.

Shri Vivek Saxena displayed conspicuous gallant action, raw courage, selflessness, stellar leadership qualities and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

5. SG CONSTABLE FAROOQ AHMED
J & K POLICE (POSTHUMOUS)

&

6. CONSTABLE ABDUL RASHID
J & K POLICE (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **12 May 2003**)

On 12 May 2003, SG Constable Farooq Ahmed was posted as incharge of the guard at JK Bank Branch, Shopian, Pulwama and Constable Abdul Rashid was on duty in the guard post. At about 1145 hrs, a burqa-clad terrorist carrying a pistol tried to enter the bank. Constable Abdul Rashid did not allow him to enter and caught hold of him, resulting in a scuffle between the two. Meanwhile, 5-6 masked terrorists carrying AK-rifles entered the bank. One of the terrorists fired in air and asked the bank employees and customers to lie down. Constable Farooq Ahmed, who was performing duty inside the bank challenged the terrorists advancing towards the cash chest. One of the terrorists fired and injured him. Despite being injured, Constable Farooq Ahmed quickly took position on the ground and returned the fire injuring one of the terrorists. Heavy gun battle ensued and both Constable Farooq Ahmed and Constable Abdul Rashid sustained serious bullet injuries. Later, both of them succumbed to their injuries. Their bravery and timely action forced the terrorists to withdraw without looting the bank thereby foiling their attempt of looting about Rs. 90 Lakhs.

SG Constable Farooq Ahmed and Constable Abdul Rashid displayed conspicuous gallant action, raw courage and exemplary devotion to duty and made the supreme sacrifice of their lives, which averted the bank robbery.

7. SHRI DILIP AGRAWAL
INDORE, MADHYA PRADESH (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **19 May 2003**)

On 19th May 2003 at about 10.40 P.M. in Agrawal Nagar, Indore, two unknown assailants tried to snatch gold chain of Smt. Uma Gupta. They stabbed her and started dragging her. Smt. Gupta screamed for help. On hearing the cries for help, Shri Dilip Agrawal rushed to the spot to help the lady. He grappled with assailants to defend Smt. Gupta. The assailants stabbed him in the stomach and injured him. Thereafter, the robbers fled away and could not take away the ornaments of Smt Gupta. Shri Agrawal had to be hospitalised. On 5.6.2003, he succumbed to the injuries.

Shri Dilip Agrawal's exceptional courageous act not only saved the life of Smt. Uma Gupta but also thwarted the attempt of the assailants to snatch her gold chain and earrings. In the process, Shri Dilip Agrawal sacrificed his life to help an unknown lady and set an example for others to emulate.

8. IC-60945 CAPTAIN PERIKALAMKATTIL ABRAHAM MATHEW, SM
3 SIKH

(Effective date of the award: **21 July 2003**)

Captain Perikalamkattil Abraham Mathew has been serving as the Battalion Adjutant on the Line of Control in Rajouri District.

On 21 July 2003, on receiving information about presence of terrorists in a village, Captain Mathew immediately moved with a Quick Reaction Team and cordoned the suspected house. Thereafter, he closed in till he drew fire from the terrorists hiding in the maize fields. After repositioning his team, he further closed in and shot dead one terrorist in a fierce encounter while being grievously injured in the head. Despite his multiple injuries, Captain Mathew crawled further and eliminated the second terrorist by lobbing grenades before falling into a coma.

Captain Perikalamkattil Abraham Mathew, SM exhibited exceptional gallantry and raw courage in close combat despite grievous injuries while killing two terrorists.

9. JC-448779 SUBEDAR PRIT PAL SINGH
4 GRENADIERS

(Effective date of the award: **17 Aug 2003**)

On 17 August 2003, while on a seek and destroy operation, Subedar Prit Pal Singh painstakingly cultivated hard intelligence about presence of some terrorists in a forest and volunteered to lead the search. On reaching the target area, he spotted one terrorist. The terrorist fired onto him. Subedar Prit Pal Singh immediately retaliated, killing the terrorist on the spot.

This alerted other terrorists hiding in a dhok, who started firing indiscriminately. Two of them came out and lobbed grenades and fled towards a nala. Due to the grenade blast, Subedar Prit Pal Singh sustained multiple splinter injuries. Despite being injured, he crawled towards the dhok under volley of terrorists' bullets and lobbed two grenades inside. Unmindful of his personal safety and displaying raw courage, he personally raided the dhok and after a fierce firefight, eliminated two more terrorists.

Subedar Prit Pal Singh displayed conspicuous bravery, raw courage, initiative and presence of mind in the face of terrorists.

10. 2885672 LANCE NAIK DESHPAL SINGH
RAJPUTANA RIFLES/9 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **17 Aug 2003**)

On 17 August 2003, Lance Naik Deshpal Singh was part of a stop in a cordon and search operation in a village in Anantnag District, J&K.

When the cordon was in the process of being established, three terrorists, in a desperate bid to escape, came charging out of a house from inside the village spraying bullets and throwing grenades in all directions. Lance Naik Oeshpal Singh was part of a stop which came in the direct firing line of the terrorists. Displaying indomitable spirit he asked his comrades to get to safety while he engaged the terrorists single handedly. In a fierce face-to-face fight, Lance Naik Deshpal Singh was hit by a bullet on his arm but despite the grave injury he killed one terrorist on the spot. With utter disregard to personal safety and bleeding profusely he repeatedly exposed himself and kept engaging the terrorists. Lance Naik Deshpal Singh was hit for a second time with a bullet on his face but the gallant soldier remained unperturbed and though rapidly sinking, shot and injured another fleeing terrorist forcing them to abort their escape attempt. The superhuman effort, despite mortal injuries ensured safety of his colleagues and later assisted in elimination of the injured terrorist. Later, he succumbed to his injuries.

Lance Naik Deshpal Singh displayed conspicuous gallantry, personal valour and bravery beyond the call of duty and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

11. SS-37068 MAJOR SANJAY SINGH TANWAR, SM*
16 PUNJAB

(Effective date of the award: **18 Aug 2003**)

On 18 August 2003, Major Sanjay Singh Tanwar placed an ambush on the bank of a river in Eastern Sector. He observed through the thermal imager three persons ferrying bags. Displaying mental agility and ingenuity of the highest order, he appreciated the need to follow them, as they could be moving to supply rations to a terrorist hideout. After following them stealthily for half an hour, using battle and field craft of the highest order and retaining surprise, he observed armed terrorists near a temporary hideout inside the dense forest.

Displaying excellent tactical acumen, Major Tanwar divided his party in three small groups. Two stops were placed to cut off the escape route of the terrorists towards a neighbouring country while he himself led the third group to raid the temporary hideout. Leading from the front by crawling in the rocky terrain and making full use of the broken ground and dense jungle under conditions of inclement weather, he closed in on the target area and fired accurately to eliminate one of the terrorists. Remaining terrorists started firing indiscriminately using automatic weapons and hurled grenades. Undaunted by the fire and grenade explosion he crawled ahead and shot the second terrorist dead. The third terrorist surprised by his swift and audacious action fired indiscriminately in a desperate attempt to escape. Displaying indomitable spirit, doggedness and alertness, he quickly closed on to the third terrorist and shot him dead.

Major Sanjay Singh Tanwar, SM* displayed resolute determination, tactical acumen, raw courage, steely nerves and conspicuous gallantry while fighting the terrorists.

12. 3183694 NAIK ANIL KUMAR
16 JAT (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **24 Aug 2003**)

Naik Anil Kumar was part of an ambush party laid to trap a terrorist who had infiltrated across Line of Control on the night of 23 August 2003. On 24 August 2003 at 0600 hours, it was decided to search the area. The ambush party was divided into three sub-groups. Naik Anil Kumar was part of a sub-group. While searching the area suddenly the terrorist came out of the thick undergrowth and opened fire with AK Rifle

and threw grenade. Naik Anil Kumar displaying presence of mind, selflessness and exemplary courage jumped in front of his comrades and took fire on himself at the same time firing back grievously injuring the terrorist. Naik Anil Kumar died on the spot due to gun shot wound on the chest and arm. His supreme sacrifice saved the life of fellow soldiers.

Naik Anil Kumar displayed courage of the highest order, selflessness and saved his comrades while making the supreme sacrifice.

13. CONSTABLE BALBIR SINGH
BORDER SECURITY FORCE (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **30 Aug 2003**)

On 30th August 2003, on the basis of specific information regarding presence of a hardcore terrorist i.e. Rana Thair Nadeem *alias* Gazi Baba, Chief Operational Commander of J-e-M in a house in Noorbagh(Srinagar), a search & cordon operation was launched by BSF. Shri Narinder Nath Dhar Dubey, Second-in-Command along with Constable Balbir Singh & other officers/personnel entered into the building by breaking down the door of the house. The ground & first floor of the house were searched & cleared. On reaching the second floor of the house, it was found vaçant. However, Shri Dubey got suspicions on noticing the peculiar manner in which the twin wardrobes were placed in the room. He instructed the personnel to take cover and hit the mirror fixed on the wardrobe. On the mirror being hit, a trap door swung open and the terrorists hiding therein opened heavy volume of fire and lobbed grenades. Shri Dubey along with Constable Balbir Singh sustained multiple bullet injuries. Despite the injuries, both of them returned the fire. One of the terrorists jumped out of the hiding place and was about to fire upon Shri Dubey at close range when Constable Balbir Singh, in utter disregard to his own life, jumped in front of the officer. Constable Balbir Singh received the bullet in his abdomen thereby saving the life of his officer. But he continued firing at the terrorist before succumbing to his injuries on the spot.

Constable Balbir Singh displayed conspicuous gallant action, raw courage and showed exemplary devotion to duty, unmindful of his safety and made the supreme sacrifice in fighting the terrorists.

14. JC-428838 NAIB SUBEDAR AJIT SINGH
PUNJAB/37 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **21 Sept 2003**)

Naib Subedar Ajit Singh was leading the Ghatak team during a search operation in a village in Northern Sector on 21 September 2003.

At 0930 hours Naib Subedar Ajit Singh gained information of two terrorists hiding in a jungle patch. He deployed his team and along with his buddy crawled into the dense vegetation as terrorists opened fire at them. Undeterred by the heavy firing he moved forth and shot dead one terrorist who was escaping in the nallah. In the process his buddy sustained a bullet injury on the right shoulder while he sustained multiple gun shot wounds on his chest, neck and abdomen. Regardless of his personal injuries he extricated his buddy to a safe place and engaged the second terrorist. Despite his profuse bleeding he inched towards the terrorist who was firing indiscriminately and shot him down in close combat. He continued to guide and motivate his team till his last breath and attained martyrdom.

Naib Subedar Ajit Singh displayed exceptional courage, conspicuous bravery, inspiring leadership and made the supreme sacrifice while combating terrorism.

15. SS-37780 MAJOR ADITYA CHAUHAN
6 MAHAR

(Effective date of the award: **10 Sept 2003**)

On 10 September 2003, Major Aditya Chauhan was commander of a search party. The task was risky and difficult due to inhospitable terrain compounded by thick maize fields. During search, party approached suspected area and drew heavy volume of fire from maize field coupled with grenade lobbying. Oblivious of fire, Major Aditya moved from person to person in the party to ensure all were under cover and in safety. Showing presence of mind and astute leadership, Major Aditya ordered support group to engage terrorists. Under cover of his buddy, he crawled up to one terrorist and shot him dead. Under heavy fire from second terrorist and with disregard to own safety, Major Aditya moved through maize field and killed him.

Major Aditya Chauhan displayed exemplary courage, devotion to duty and outstanding leadership in combat.

16. 4571437 SEPOY KIRAN KUMAR
6 MAHAR (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **11 Sept 2003**)

Sepoy Kiran Kumar was an outstanding scout. At 0900 hours on 11 September 2003 on specific input, Ghatak platoon cordoned off suspected area. An officer with Ghatak team including Sepoy Kiran Kumar and his buddy approached area led by unit tracker dog. A sudden and heavy volume of fire from behind tree pinned down Sepoy Kiran Kumar's colleagues in maize field. Sepoy Kiran Kumar, unmindful of his own safety and undeterred by constant terrorist fire and grenade throwing moved ahead, closed in with terrorist and shot him dead thus saving lives of colleagues. While

crawling, Sepoy Kiran Kumar came face-to-face with second terrorist. Both fired simultaneously. Second terrorist was killed. In this bold action Sepoy Kiran Kumar sustained gun shot wound on head and succumbed to injury during evacuation.

Sepoy Kiran Kumar showed exceptional gallantry, selflessness devotion and unparallel camaraderie with utter disregard to personal safety in the face of terrorists' fire and made the supreme sacrifice.

17. **3181886 NAIK MUNNA LAL MUNDEL**
9 JAT

(Effective date of the award: **18 Sept 2003**)

Naik Munna Lal Mundel was part of Quick Reaction Team, which foiled the raid by terrorists on own post in Naoshera Sector in Jammu & Kashmir on 18 September 2003.

Naik Munna Lal Mundel, with utter disregard to his own safety, displaying exemplary courage ferociously out flanked terrorists raiding party on line of control. When Quick Reaction Team came under perilous fire from terrorists hiding behind boulders, he skirted the boulders and lobbing grenades charged at the terrorists. Being cornered, the terrorists also charged towards him but displaying professional edge Naik Munna Lal Mundel killed two terrorists in a fierce close combat, one of them with commando dagger in hand-to-hand fight, thus, saving own vital sensitive post and life of comrades. During pursuit of withdrawing terrorists, he stepped on a mine, got seriously injured and fell. Remaining cool, he continued to engage the withdrawing terrorists, who left behind eight bodies of their comrades and large quantity of Arms and Ammunition.

Naik Munna Lal Mundel displayed outstanding and conspicuous personal bravery, unparalleled courage and fighting spirit.

18. **JC-488932 SUBEDAR KHILONA SINGH**
14 JAT (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **19 Sept 2003**)

Subedar Khilona Singh was serving on the Line of Control in Rajouri District, Jammu and Kashmir as Ghatak Platoon Commander.

On 19 September 2003, while in cordon and search operation led by an Officer he along with his buddy encountered two terrorists at extreme close range. His buddy got injured due to terrorist fire. Subedar Khilona Singh who was in their vicinity realising the gravity of the situation, immediately charged the terrorist with his buddy and in doing so killed terrorist each in hand-to-hand combat while being mortally wounded.

Subedar Khilona Singh displayed exceptional gallantry, inspirational leadership and sacrificed his life in the best traditions of the Indian Army while saving the lives of his comrades.

19. IC-429470 NAIB SUBEDAR BABU RAM
25 PUNJAB

(Effective date of the award: **27 Sept 2003**)

Naib Subedar Babu Ram has been serving as Ghatak Platoon Commander during OPERATION RAKSHAK and OPERATION PARAKRAM on the Line of Control.

On 27 September 2003, while in a cordon and search operation in a maize field in a Village in Poonch District, J&K, Naib Subedar Babu Ram came face-to-face with three terrorists who opened fire on him. Unmindful of the grave danger to himself, he instantly charged through the hail of fire, shot the first terrorist and then charged and shot the second terrorist in extreme close combat. The third terrorist immediately took position by which time he disengaged to reposition himself and once again engaged the terrorist till shot by his buddy.

On 03 October 2003, while in an ambush near Forward Defended Locality, allowed a group of three terrorists within two meters range and opened fire at point blank range, killing the leading terrorist while the other two were shot by his buddies.

Naib Subedar Babu Ram repeatedly displayed exceptional bravery of the highest order despite grave danger, leadership and professionalism in killing three terrorists in extreme close combat.

20. 13622724 PARATROOPER CHETAN KUMAR RANA
PARA/31 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **06 Oct 2003**)

On 06 October 2003, a Team of a Rashtriya Rifles Unit of which Paratrooper Chetan Kumar Rana was member launched seek and destroy mission in a general area in Northern Sector by 1500 hours. The team suspected presence of terrorists in a house. The scouts and point squad immediately cordoned the house. While troops were clearing the house two terrorists suddenly came out charging, lobbing grenades and firing simultaneously and caused injuries to Paratrooper Chetan Kumar Rana and other troops covering the exits. Sensing the grave danger to which own troops were exposed and remaining undeterred, despite gun shot wound in the chest and splinter injuries, Paratrooper Chetan Kumar Rana unmindful of his personal safety displayed raw courage and charged at the advancing terrorists firing simultaneously from his weapon and in a valiant action gunned down both of them at close quarters before succumbing to his injuries.

Paratrooper Chetan Kumar Rana showed gallant act of exceptional valour, exemplary raw courage and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

21. 56575 HAVILDAR RAMAKANT SINGH
5 ASSAM RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **13 Oct 2003**)

On 13 October 2003 at around 1000 hours a column consisting of one officer, one Junior Commissioned Officer and 18 other ranks was on area domination patrol in a general area in the Eastern Sector when they spotted two persons running away across paddy fields about 100 yards away. Scout party led by Havildar Ramakant Singh immediately started chasing them. Being chased, terrorists started firing indiscriminately at own party. Havildar Ramakant Singh chasing through paddy fields fired at fleeing terrorists and injured one of them. The terrorists managed to approach foothills and started climbing up. Havildar Ramakant Singh and his party pursued the terrorists relentlessly and while closing in during the search was fired at by a burst of bullets from the injured terrorist who was hiding in the bushes. Inspite of receiving gunshot wound Havildar Ramakant Singh kept on firing with his weapon and charged at the terrorist killing him instantly. He succumbed to bullet injuries at the site.

Havildar Ramakant Singh displayed raw courage, grit, determination, extreme resolve, loyalty, comradeship and made the supreme sacrifice in performing his duties.

22. 13688382 HAVILDAR VIRENDRA SINGH
GUARDS/21 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **15 Oct 2003**)

Havildar Virendra Singh was part of a seek encounter patrol in an area in Northern Sector. At approximately 1910 hours, two terrorists disguised as civilians suddenly opened effective fire on the patrol. Havildar Virendra Singh was seriously wounded in the first volley of fire. He refused immediate evacuation and continued to lead the patrol in pitch darkness. Unmindful of personal safety, he rushed into the direction of fire and killed two terrorists single-handedly. This instantaneous act of raw courage of Havildar Virendra Singh resulted in saving lives of other members of the patrol. The operation resulted in recovery of three AK 47 rifles, one disposable Rocket Launcher, three grenades, one Under Barrel Grenade Launcher, one radio set and other war like stores. However, Havildar Virendra Singh succumbed to his injuries.

Havildar Virendra Singh displayed outstanding act of gallantry, extraordinary courage, raw guts and offensive spirit beyond the call of duty and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

23. 5349939 RIFLEMAN HASTA BAHADUR GURUNG
4/4 GORKHA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **22 Oct 2003**)

Based on specific information of presence of terrorists in general area in Eastern Sector on 20 October 2003, Ghatak platoons were launched at 0300 hrs on search and destroy operation.

On 22 October 2003, Ghatak column while negotiating gorge short of the village came under heavy fire, which had pinned down the advancing team. Moving ahead became difficult under intense and effective firing. Rifleman Hasta Bahadur Gurung, with his Sniper Rifle, showing raw courage and presence of mind crawled ahead to reach a vantage point. On reaching vantage point, Rifleman Hasta Bahadur Gurung fired at a terrorist firing automatic weapons on advancing team and killed him on the spot. As a result of his action the terrorist fire shifted from advancing team to Rifleman Hasta Bahadur Gurung. Irrespective of heavy volume of fire on him, Rifleman Hasta Bahadur Gurung crawled ahead. Totally disregarding his safety and by risking his life, he killed one more terrorist. In this daring action Rifleman Hasta Bahadur Gurung was hit by terrorist bullets. Later he succumbed to his injuries.

Rifleman Hasta Bahadur Gurung showed extreme courage under fire and most conspicuous act of bravery and made the supreme sacrifice for the nation.

24. 2694122 GRENADIER ARJAN SINGH
12 GRENADIERS (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **22 Oct 2003**)

On specific Intelligence provided by own sources regarding movement of terrorists in the area, a column was launched from unit location to general area at about 2230 hours on 22 October 2003. Officiating Commanding Officer personally led the ambush. The ambush party reached the area at about 0230 hours and deployed itself. At about 0610 hours the party noticed a group of six to seven terrorists moved towards ambush site and when terrorists closed in, they opened fire thereby killing one terrorist on the spot and injuring several others. The terrorists dispersed into the adjoining jungles and launched retaliatory fire towards the ambush party. Grenadier Arjan Singh alongwith his Commanding Officer chased the fleeing terrorists and despite the heavy volume of fire towards them, closed in and shot one terrorist dead with his personal weapon after a heavy exchange of fire. In the exchange of fire Grenadier Arjan Singh sustained gun shot wound on left upper chest near shoulder. Despite the injury, Grenadier Arjan Singh refused to get evacuated and continued to engage the terrorists. Another terrorist approaching him from the jungle was also shot dead by Grenadier Arjan Singh. Two more terrorists were shot dead by his Commanding

Officer. Grenadier Arjan Singh was evacuated to Military Hospital, by helicopter on 23 October 2003 but succumbed to his injuries same day.

Grenadier Arjan Singh displayed indomitable courage, personal gallantry, fierce determination and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

25. JC-488513 SUBEDAR JAI SINGH
JAT/45 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **31 Oct 2003**)

Subedar Jai Singh has been serving with a Rashtriya Rifles Unit as Platoon Commander. On 31 October 2003 when he was deployed to lay inner cordon around suspect houses at a village in Poonch District in Jammu and Kashmir, terrorists opened up with automatics resulting in fierce firefight. Subedar Jai Singh readjusted his cordon despite being engaged effectively and set ablaze target house with great ingenuity. One terrorist found escaping from window was shot dead by him. Two other terrorists ran out of house charging at Subedar Jai Singh's stop party, one of them was observed with Improvised Explosive Device strapped on leg. Displaying most conspicuous bravery in the face of imminent death; to save his subordinates, Subedar Jai Singh rushed out from his stop, blazing his automatic, intercepted the terrorist and killed him. He was mortally injured, yet continued further, eliminated third terrorist by lobbying hand-grenade before succumbing to injuries.

Subedar Jai Singh displayed indomitable resolve, raw courage and audacious action in fighting the terrorists and made the supreme sacrifice to save his comrades.

26. 15321590 SAPPER G PRAKASH
ENGINEERS/44 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **16 Nov 2003**)

On receiving information about the presence of terrorists, a search party moved into a town in the Eastern Sector. Search commenced from 0730 hours on 16 November 2003. During search leading scouts Sapper G Prakash and his buddy came under fire. Not caring for personal safety they rushed into adjacent house and engaged terrorists by effective fire. During firefight Sapper G Prakash observed one terrorist near window of target house and shot him dead on spot. Since fire was not effective on second terrorist, IED was planted. When it was to explode terrorist opened heavy volume of fire, injuring Sapper G Prakash and his buddy and jumped out of window. Sapper G Prakash though injured without caring for personal safety covering buddy opened effective fire on terrorist invalidating him, who was subsequently killed. Sapper G Prakash, though wounded, displayed indomitable courage in killing one foreign terrorist and injuring one terrorist. Sapper G Prakash

succumbed to gun shot wound on spot.

Sapper G Prakash displayed intelligence, valour by exposing himself to grave danger, conspicuous initiative, in face-to-face combat and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

27. 2896094 RIFLEMAN LAKSHMAN SINGH
RAJPUTANA RIFLES/9 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **07 Dec 2003**)

Riflemen Lakshman Singh was part of a cordon and search operation launched by a Rashtriya Rifles Battalion at a Village in J&K.

The village was effectively cordoned off by 1530 hours on 7th December 2003. At 1620 hours, the search party was fired upon by terrorists and a fierce firefight ensued. At 1630 hours, one terrorist made a desperate attempt to escape by jumping from the window of the house and running away. Rifleman Lakshman Singh waited for the terrorist to close in and then using his personal weapon shot him dead. Meanwhile, he saw another terrorist firing and approaching towards him. Rifleman Lakshman Singh throwing all caution to the wind, with a grave personal risk stood up and blocked his path. In the firefight, Rifleman Lakshman Singh was hit by a bullet but he continued to fire at the terrorist and killed him before falling unconscious. He breathed his last while being evacuated to the hospital.

Rifleman Lakshman Singh displayed conspicuous gallantry, personal valour and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists for the country.

28. 3401087 SEPOY JASBIR SINGH
7 SIKH

(Effective date of the award: **21 Dec 2003**)

Sepoy Jasbir Singh was serving as part of Commanding Officer's Quick Reaction Team on the Line of Control in District Poonch, Jammu and Kashmir.

On 21 December 2003 during search after an encounter, Sepoy Jasbir Singh observed suspicious movement in the undergrowth. Two terrorists opened heavy volume of fire on seeing Sepoy Jasbir Singh, who was crawling forward taking cover of broken ground. Despite being under effective fire he outflanked and further closed in and shot dead one terrorist at extreme close range. The second terrorist continued firing at Sepoy Jasbir Singh, who engaged him by lobbing grenades and preventing his escape. There being no response from the terrorist, Sepoy Jasbir Singh displayed rare courage initiative and boldness and entered the bushes to close in with the terrorist. The terrorist immediately fired at him. Jumping to a side Sepoy Jasbir Singh returned the fire and shot dead the second terrorist at point blank range.

Sepoy Jasbir Singh displayed exceptional bravery and raw courage in killing two terrorists in quick succession in close combat.

29. IC-60708 CAPTAIN VIVEK MISHRA
16 GARHWAL RIFLES

(Effective date of the award: **24 Dec 2003**)

On 24 December 2003, Captain Vivek Mishra demonstrated extra-ordinary fervour for intelligence acquisition and after specific tasking of a source, obtained credible inputs about infiltration by a group of terrorists in a general area in Eastern Sector. The officer located the ambush tactfully and with ingenuity. The scout of the ambush, using thermal imagery night vision devices, noticed suspicious movement and a fierce firefight ensued in which two terrorists were killed.

Realising the urgency of cutting off escape, the officer intelligently moved from a flank and positioned himself suitably. Exhibiting raw courage, grit and determination, he changed positions notwithstanding the intense fire and killed the third terrorist. He then closed on to the fourth terrorist and also killed him with a burst of his AK-47 rifle. The fifth terrorist had become desperate and he pounced on the officer. In a fierce close quarter fight, the officer, showing rare intrepidity and oblivious of danger to own safety, courageously over-powered and finally killed the fifth terrorist.

Captain Vivek Mishra displayed conspicuous bravery, raw courage and excellent battlefield leadership during the operation.

30. SS-38315 MAJOR LALIT PRAKASH
3 RAJPUT (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **17 Jan 2004**)

On 16 January 2004, Major Lalit Prakash apprehended two terrorists in a village in Northern Sector. Preliminary investigation indicated hideout in a forest area. On 17 January 2004, Major Lalit Prakash led a patrol to locate the route to the hideout. At 0815 hours while climbing towards forest, patrol came under effective fire. Major Lalit Prakash reacted with ferocity and returned fire. During exchange of fire, Major Lalit Prakash, his radio operator and a Nursing Assistant sustained gun shot wounds. Fierce firefight ensued and patrol was pinned down by effective fire from hideout. Major Lalit Prakash, unmindful of his injury, crawled in heavy snow and shot down two terrorists and injured one. This action of the officer allowed rest of the party to take cover. The officer succumbed to his injury before evacuation. Inspired by his gallant action, the patrol killed four more terrorists and destroyed the hideout completely.

Major Lalit Prakash displayed conspicuous bravery, inspiring leadership and made the supreme sacrifice while fighting the terrorists.

31. **15140924 GUNNER BOBICHEN KOYIKALAM ALEX**
ARTILLERY/ [illegible] RASHTRIYA RIFLES

(Effective date of the award: **29 Jan 2004**)

Gunner Bobichen Koiqulam Alex was part of inner cordon during search operation on 29 January 2004. Around 1730 hours, as his column was crossing an open patch while probing the target house, they came under heavy automatic fire from cowshed adjacent to it. Gunner Bobichen Koiqulam Alex, realising threat to his comrades, voluntarily crawled forward, taking cover of rain and haze, closed on to the terrorists firing from behind the cowshed and showing exemplary presence of mind and raw courage killed one terrorist and injured another in a face to face encounter. The injured terrorist ran into the cowshed and brought down automatic fire. Gunner Bobichen Koiqulam Alex displaying utter disregard to own safety, continued to crawl forward and reached the entry point and lobbed a grenade inside, killing the terrorist. Elimination of these two terrorists allowed the inner cordon to occupy advantageous position for tackling the target house and killing of four more terrorists.

Gunner Bobichen Koiqulam Alex displayed conspicuous bravery, raw courage, exemplary leadership and care for troops in the face of terrorists' fire.

32. **JC-548602 SUBEDAR MOSHAT LAMKANG, SM**
8 ASSAM (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **05 Feb 2004**)

Subedar Moshat Lamkang volunteered to operate in Trachh jungles in inclement weather. On 05 February 2004 at 1100 hours, the party came under heavy volume of fire from a underground hide at a distance of 20 meters. He moved from flank to cordon to neutralize the fire. While approaching, he spotted an armed terrorist close to him who detached him. Displaying extremely quick reflexes, Subedar Moshat Lamkang shot the terrorist dead. Meantime, two terrorists from another hide fired and critically injured him in shoulder and chest. Sensing grave danger to his comrades, Subedar Moshat unmindful of personal safety and agony, charged and killed both terrorists in face-to-face encounter. Subedar Moshat, inspite of injury, with dogged determination continued to fire at the hide preventing escape of terrorist, till evacuated to safety where he succumbed to his injuries. His action attributed to success of operation, killing nine foreign terrorists.

Subedar Moshat Lamkang, SM displayed bold initiative, conspicuous act of bravery in facing the terrorists and made the supreme sacrifice.

8—321 GI/2004

33. **15302488 HAVILDAR S SAMYKANNAN**
4 CORPS INT & FS COY (POSTHUMOUS)

(Effective date of the award: **01 April 2004**)

On 01 April 2004 at about 1700 hours as a culmination of his long drawn efforts in establishing effective intelligence network Havildar S Samy Kannan received specific information about the movement of three hardcore terrorists in Eastern Sector.

Reacting promptly with no time to muster army troops Havildar S Samy Kannan along with two other ranks rushed to the place of information and also informed the other team to follow. On reaching the spot Havildar S Samy Kannan spotted three suspected men. Even in the absence of numerical superiority Havildar S Samy Kannan challenged them to surrender. In the meantime the other team also reached the spot. On being challenged one of the terrorists took out a pistol. Havildar S Samy Kannan, without caring for his personal safety, pounced upon the terrorists and snatched the pistol. In the hand-to-hand combat, the terrorists took out a grenade and tried to lob it on the rest of the party, which was following. Sensing danger to his own comrades, Havildar S Samy Kannan, again displaying undaunted courage and sheer disregard to his own safety wrestled with the terrorists to snatch the grenade. Havildar S Samy Kannan was able to press the terrorists from throwing the grenade onto his comrades but received the maximum impact of the blast and succumbed to injuries.

Havildar S Samy Kannan displayed conspicuous gallantry, indomitable courage in the face of terrorists' fire and made the supreme sacrifice in saving the lives of fellow comrades.

No.129–Pres/2004 - The President is pleased to approve the award of the **"Bar to Sena Medal/Army Medal"** to the undermentioned personnel for the acts of exceptional courage:-

1. IC-47833 MAJOR SUKHMINDER SINGH, SM
   ARTILLERY/45 RASHTRIYA RIFLES

2. IC-56055 CAPTAIN RAJESHWAR SINGH BAZAD, SM
   RAJPUT/23 RASHTRIYA RIFLES

3. 9094166 LANCE HAVILDAR FAZAL HUSSAIN, SM
   5 JAMMU AND KASHMIR LIGHT INFANTRY

(BARUN MITRA)
DIRECTOR

No.130–Pres/2004 - The President is pleased to approve the award of the "Sena Medal/Army Medal" to the undermentioned personnel for the acts of exceptional courage:-

1. IC-43875 LIEUTENANT COLONEL VIJAY MEHTA, 11 JAT
2. IC-46501 MAJOR SUJAN SINGH KULAR, JAT/45 RASHTRIYA RIFLES
3. IC- 46926 MAJOR VIRENDER SINGH, 12 GRENADIERS
4. IC-49541 MAJOR ARJUN SEGAN, 10 PARA (SPECIAL FORCES)
5. IC-50008 MAJOR SANJAY PRAKASH SINHA, 7 RAJPUTANA RIFLES
6. IC-50035 MAJOR ALOK MATHUR
   ENGINEERS/85 ROAD CONSTRUCTION COMPANY (POSTHUMOUS)
7. IC-50145 MAJOR RAJENDER SINGH, 28 MADRAS
8. IC-50781 MAJOR RAJESH SETHI, 4 JAT
9. IC- 50961 MAJOR AMIT KABTHIYAL, 16 GARHWAL RIFLES
10. IC- 51313 MAJOR JAGDEEP SINGH MANN, ARTILLERY/ 2/3 DET EC LU
11. IC-51520 MAJOR HRISHIKESH BHALCHANDRA GRAMOPADHYE,
    11 MARATHA LIGHT INFANTRY
12. IC-51745 MAJOR AJIT SINGH YADAV, ARTILLERY/52 RASHTRIYA RIFLES
13. IC-52728 MAJOR VIKAS SLATHIA
    JAMMU & KASHMIR RIFLES/3 RASHTRIYA RIFLES
14. IC- 52966 MAJOR MANDEEP SINGH, 16 GARHWAL RIFLES
15. IC-53143 MAJOR NAVNEET VATS
    3 GORKHA RIFLES/32 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)
16. IC-53657 MAJOR NEELESH ANAND PAGULWAR, 8 ASSAM

17. IC-54058 MAJOR JITENDER SINGH RATHORE
ARMOURED CORPS/28 ASSAM RIFLES

18. IC-54425 MAJOR NIKHIL GANAPATHY
ARMOURED CORPS/35 RASHTRIYA RIFLES

19. IC-54495 MAJOR KUNDAN SHARMA
JAMMU & KASHMIR RIFLES/28 RASHTRIYA RIFLES

20. IC-54913 MAJOR FAZALUDDIN JELAL
ENGINEERS/1 RASHTRIYA RIFLES

21. IC-55261 MAJOR SUNIL RAINA, 12 JAMMU & KASHMIR RIFLES

22. IC-55458 MAJOR KRISHAN SINGH BADHWAR
RAJPUT/23 RASHTRIYA RIFLES

23. IC-55561 MAJOR PANKAJ KANT KHANDURI, JAT/5 RASHTRIYA RIFLES

24. IC-55807 MAJOR SHABBARUL HASAN, ARTY/14 FD REGT

25. IC-56002 MAJOR JAISHANKAR CHAUDHARI, 8 ASSAM

26. IC-56031 MAJOR AJAY SINGH, ARMOURED/3 LADAKH SCOUTS

27. IC-57133 MAJOR PAWAN PAL SINGH, MAHAR/51 RASHTRIYA RIFLES

28. IC-57774 MAJOR SARJEET YADAV, AD ARTY/17 RASHTRIYA RIFLES

29. IC-58856 MAJOR CHANDAR DEV SINGH SAMBYAL
12 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

30. IC-59098 MAJOR ADITYA SINGH, 7 RAJPUTANA RIFLES

31. IC-60247 MAJOR SAMEER B GUJAR, 19 GARHWAL RIFLES

32. IC-60283 MAJOR AMIT DOGRA, 5 PARA

33. IC-60597 MAJOR SACHIN JAIN, 18 MARATHA LIGHT INFANTRY

34. SS-37136 MAJOR ZOSANGLIANA HUALNGO, 5/3 GORKHA RIFLES

35. RC-1123 MAJOR PIAR SINGH ATTRI, 18 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

36. IC-54116 CAPTAIN PATHIYERI SUNIL KUMAR
MECH INFANTRY/28 ASSAM RIFLES

37. IC-55938 CAPTAIN B SHYAM VIJAYA SIMHA
ARMY SERVICE CORPS/31 RASHTRIYA RIFLES

38. IC-56817 CAPTAIN JITESH BHUTANI
ARMOURED/31 COMPOSITE INTELLIGENCE UNIT (POSTHUMOUS)

39. IC-59382 CAPTAIN MRIDUL SHARMA
AIR DEFENCE ARTILLERY/51 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

40. IC-59659 CAPTAIN HARISH RAMAN, ARTILLARY/13 RASHTRIYA RIFLES

41. IC-59696 CAPTAIN AMIT ASHOK KUMAR VERMA
ARTILLERY/15 RASHTRIYA RIFLES

42. IC-61151 CAPTAIN ARINDAM GHOSH, 7 RAJPUTANA RIFLES

43. IC-61772 CAPTAIN HARSH KUMAR JHA, 10 JAMMU & KASHMIR RIFLES

44. IC-61904 CAPTAIN VIJAY SINGH RAWAT
ARMY SERVICE CORPS/11 RAJ RIF

45. SS-38672 CAPTAIN SANJEEV BAJPAI
MARATHA LIGHT INFANTRY/17 RASHTRIYA RIFLES

46. SS-38074 CAPTAIN AJAY SINGH RANA
ARTILLERY/60 FIELD REGIMENT (POSTHUMOUS)

47. SS-38437 CAPTAIN PRASAD SANTOSH KRISHNA
ARTILLERY/22 ASSAM RIFLES

48. SS-38678 CAPTAIN PRADEEP SHARMA
ENGINEERS/19 RASHTRIYA RIFLES

49. IC-60224 LIEUTENANT SACHIN WAKANKAR
ARTILLERY/22 SPECIAL FORCES

50. IC- 60659 LIEUTENANT DEEPAK SINGH PATWAL, 12 GRENADIERS

51. IC- 61069 LIEUTENANT MUSHTAQ AHMED KHAN
19 JAMMU & KASHMIR RIFLES

52. IC-61418 LIEUTENANT MUPPARTY SANJEEV, 21 JAT REGIMENT

53. IC-61490 LIEUTENANT PRASHANT SHANTAPPA APPAJI,
SIGNALS/45 RASHTRIYA RIFLES

54. IC-61515 LIEUTENANT INDER PAL SINGH
19 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

55. IC-61903 LIEUTENANT SHASHANK TRIPATHI, 237 ENGINEER REGIMENT

56. IC-62201 LIEUTENANT RAKESH MADAAN
ARMY ORDINANCE CORPS/2 JAT

57. IC-62246 LIEUTENANT VISHESH ARORA, 15 JAMMU & KASHMIR RIFLES

58. IC-62675 LIEUTNANT JOGINDER SINGH, 4 GRENADIERS

59. IC- 62719 LIEUTENANT ANKUR VASHISHTHA, 7 SIKH REGIMENT

60. IC-62721 LIEUTENANT SRIKANT RAMACHANDRAN, 14 JAT REGIMENT

61. IC-62871 LIEUTENANT PANKAJ KUMAR ARORA
18 MARATHA LIGHT INFANTRY (POSTHUMOUS)

62. SS-39488 LIEUTENANT PAWANMEET BRAR
18 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

63. SS-39543 LIEUTENANT NITHIN HARIRAM, 9 JAT REGIMENT

64. SS-39789 LIEUTENANT RAVINDER SAINI, 11 SIKH REGIMENT

65. JC-185490 SUBEDAR ANURAG CHANDRA SINGH
GRENADIERS/29 RASHTRIYA RIFLES

66. JC-212626 SUBEDAR GURBACHAN SINGH, 3 SIKH REGIMENT

67. JC-260278 SUBEDAR SURESH KUMAR YADAV
ARTILLERY/30 RASHTRIYA RIFLES

68. JC-418265 SUBEDAR RAMESH KUMAR, MECH INF/16 RASHTRIYA RIFLES

69. JC-428754 SUBEDAR DHYAN SINGH, 13 PUNJAB (POSTHUMOUS)

70. JC-458629 SUBEDAR SHANKAR GANAPATI DEVKATE,
MARATHA LIGHT INFANTRY/41 RASHTRIYA RIFLES

71. JC-468534 SUBEDAR DHARAM PAL SINGH, 7 RAJPUTANA RIFLES

72. JC-488149 SUBEDAR BHURA RAM, JAT/5 RASHTRIYA RIFLES

73. JC-488829 SUBEDAR ALBEL SINGH, 21 JAT REGIMENT

74. JC-568596 SUBEDAR KHEM SINGH, MAHAR/1 RASHTRIYA RIFLES

75. JC-579027 SUBEDAR DAULAT RAM, 8 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

76. JC-592599 SUBEDAR ALI MOHAMMAD
JAMMU & KASHMIR LIGHT INFANTRY/51 RASHTRIYA RIFLES

77. JC-623247 SUBEDAR RAM BAHADUR ROKA, 5/8 GORKHA RIFLES

78. JC-260848 NAIB SUBEDAR SULTAN SINGH RATHORE
ARTTILERY/45 RASHTRIYA RIFLES

79. JC-261937 NAIB SUBEDAR DHARAM SINGH
ARTILLERY/17 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

80. JC-449270 NAIB SUBEDAR AKBAL AHMED KHAN
GRENADIERS/29 RASHTRIYA RIFLES

81. JC-459193 NAIB SUBEDAR SHAIK AKBAR
11 MARATHA LIGHT INFANTRY (POSTHUMOUS)

82. JC-479180 NAIB SUBEDAR PRABHU SINGH, 3 RAJPUT (POSTHUMOUS)

83. JC-479183 NAIB SUBEDAR BHARAT SINGH GURJAR, 3 RAJPUT

84. JC-529342 NAIB SUBEDAR DIWAN SINGH
12 GARHWAL RIFLES (POSTHUMOUS)

85. JC-568962 NAIB SUBEDAR DHARAMVIR
6 MAHAR REGIMENT (POSTHUMOUS)

86. JC-569230 NAIB SUBEDAR SATYAPAL, 6 MAHAR REGIMENT

87. JC-578636 NAIB SUBEDAR GOPAL SINGH SAINI
12 JAMMU & KASHMIR RIFLES

88. JC-579139 NAIB SUBEDAR PUKAR LAMA
19 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

89. JC-592818 NAIB SUBEDAR RAMESH CHANDER
JAMMU & KASHMIR LIGHT INFANTRY/8 RASHTRIYA RIFLES

90. JC-602459 NAIB SUBEDAR GIRMAN RANA
1 GORKHA RIFLES/15 RASHTRIYA RIFLES

91. 2481183 HAVILDAR BHUPINDER SINGH, 9 PARA (SPECIAL FORCES)

92. 2785147 HAVILDAR RAMAPPA MIRJI
18 MARATHA LIGHT INFANTRY (POSTHUMOUS)

93. 2879822 HAVILDAR SUMER SINGH, 11 RAJPUTANA RIFLES

94. 3179371 HAVILDAR HARPAL SINGH, 9 JAT REGIMENT

95. 3990159 HAVILDAR PRATAP SINGH, 21 RAJPUTANA RIFLES

96. 4061578 HAVILDAR SHISHUPAL SINGH, 16 GARHWAL RIFLES

97. 4065809 HAVILDAR DABAL SINGH, 16 GARHWAL RIFLES

98. 4069249 HAVILDAR TRILOK SINGH
GARHWAL RIFLES/36 RASHTRIYA RIFLES

99. 4358576 HAVILDAR RAMDHAN BORO, 6 ASSAM (POSTHUMOUS)

100. 5846960 HAVILDAR KESH BAHADUR CHHETRI, 2/9 GORKHA RIFLES

101. 9087364 HAVILDAR MANZOOR AHMED
JAMMU AND KASHMIR LIGHT INFANTRY/23 RASHTRIYA RIFLES

102. 13615174 HAVILDAR BADRI PRASAD, 10 PARA (SPECIAL FORCES)

103. 13617884 HAVILDAR VINOD JANARDHANAN
MADRAS/8 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

104. 13747720 HAVILDAR JASWANT SINGH
JAMMU & KASHMIR RIFLES/28 RASHTRIYA RIFLES

105. 13748070 HAVILDAR VINOD KUMAR, 15 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

106. 13748908 HAVILDAR RASHPAL SINGH, 15 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

107. 13749857 HAVILDAR SUNIL DUTT, 19 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

108. 14701203 HAVILDAR GOPAL SINGH, 8 KUMAON

109. 3181604 LANCE HAVILDAR BABU RAM
2 JAT REGIMENT (POSTHUMOUS)

110. 3184298 LANCE HAVILDAR BHARAT SINGH, 21 JAT REGIMENT

111. 7242115 LANCE DAFADAR SWAPAN BERA
RVC/33 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

112. 2890033 NAIK NARESH SINGH, 7 RAJPUTANA RIFLES

113. 2891596 NAIK RAM LAKHAN SINGH
20 RAJPUTANA RIFLES (POSTHUMOUS)

114. 3185329 NAIK HARDIT SINGH, 8 JAT REGIMENT

115. 3993033 NAIK SUDESH KUMAR
9 PARA (SPECIAL FORCE) (POSTHUMOUS)

116. 4071156 NAIK MAHIPAL SINGH, 16 GARHWAL RIFLES

117. 4071251 NAIK RAGUBIR SINGH BARTWAL
7 GARHWAL RIFLES (POSTHUMOUS)

118. 4072135 NAIK ATOL SINGH PANWAR, 16 GARHWAL RIFLES

119. 4183862 NAIK NANDAN SINGH MEHRA, 21 KUMAON (POSTHUMOUS)

120. 5247235 NAIK TIKA RAM SINJALI THAPA, 5/3 GORKHA RIFLES

121. 5752722 NAIK RAJU GURUNG, 5/8 GORKHA RIFLES

122. 13619048 NAIK JOGENDRA SINGH, 5 PARA (POSTHUMOUS)

123. 13751467 NAIK BISHAN LAL
JAMMU & KASHMIR RIFLES/28 RASHTRIYA RIFLES

124. 13753453 NAIK DARBAR SINGH
JAMMU & KASHMIR RIFLES/52 RASHTRIYA RIFLES

125. 13755631 NAIK GURBACHAN SINGH, 10 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

126. 13755679 NAIK AMRIK SINGH, 18 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

127. 15763964 NAIK PINTU GHOSH
AIR DEFENCE ARTILLERY/23 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

128. 15768443 NAIK AMARNATH CHATURVEDI
AIR DEF ARTILLERY/15 RASHTRIYA RIFLES

129. 2484468 LANCE NAIK KULDIP SINGH, PUNJAB/22 RASHTRIYA RIFLES

130. 2485458 LANCE NAIK RANDHIR SINGH, 24 PUNJAB

131. 2689993 LANCE NAIK DUNGER SINGH
GRENADIERS/12 RASHTRIYA RIFLES

132. 2891839 LANCE NAIK CHANDRA BHAN SINGH
RAJPUTANA RIFLES/9 RASHTRIYA RIFLES

133. 2994892 LANCE NAIK GANPAT SINGH RATHORE
3 RAJPUT (POSTHUMOUS)

134. 3187823 LANCE NAIK YAGYA DATT, 21 JAT REGIMENT

135. 3188780 LANCE NAIK JAGDISH PRASAD DHINWA
14 JAT (POSTHUMOUS)

136. 3398382 LANCE NAIK NIRPAL SINGH, 5 SIKH

137. 4073603 LANCE NAIK GABAR SINGH, 10 PARA (SPECIAL FORCE)

138. 4567755 LANCE NAIK JEET SINGH
MAHAR/1 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

139. 9097172 LANCE NAIK RAM LAL
12 JAMMU & KASHMIR LIGHT INFANTRY (POSTHUMOUS)

140. 13756412 LANCE NAIK RAVI KUMAR
JAMMU & KASHMIR RIFLES/31 RASHTRIYA RIFLES

141. 13759437 LANCE NAIK MANOHAR LAL
8 JAMMU AND KASHMIR RIFLES (POSTHUMOUS)

142. 14403608 LANCE NAIK SUSHIL KUMAR
ARTILLERY/60 FIELD REGIMENT (POSTHUMOUS)

143. 15373301 LANCE NAIK ATANU MAITY
SIGNALS/44 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

144. 15764578 LANCE NAIK SATYA PRAKASH SINGH,
AIR DEFENCE ARTILLERY/23 RASHTRIYA RIFLES

145. 15772259 LANCE NAIK AJAY KUMAR
AIR DEFENCE ARTILLERY/25 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

146. 2492263 SEPOY BALWINDER SINGH, 16 PUNJAB

147. 2494250 SEPOY JASWANT SINGH, 25 PUNJAB

148. 2795407 SEPOY KALLAPPA BHADRASETTI
MARATHA LIGHT INFANTRY/41 RASHTRIYA RIFLES

149. 2799112 SEPOY SIDDAPPAJI L, 18 MARATHA LIGHT INFANTRY

150. 2994600 SEPOY SHOKET HUSSAIN, RAJPUT/10 RASHTRIYA RIFLES

151. 2997233 SEPOY SANJEEV KUMAR, 3 RAJPUT REGIMENT (POSTHUMOUS)

152. 3005715 SEPOY PRADEEP KUMAR, 3 RAJPUT (POSTHUMOUS)

153. 3187717 SEPOY RAKESH KUMAR, 2 JAT (POSTHUMOUS)

GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD

Income-tax statement in respect of Shri.....for the year 2004-2005

Salary from March to February,	:	**20% rebate under section-88**	
	:	G.P.F.	:
Pay Commission Arrear	:	C.G.E.I.S.	:
Dearness allowance Arrear	:	L.I.C.	:
Productivity Linked Bonus	:	N.S.C.	:
Overtime Allowance	:		
Tuition Fee	:		
Transportation Allowance	: (—)	Total :	
Miscellaneous recovery during the year	: (—)	Total Rebate :	
Total	:	**Taxable amount**	
Say Rs.	:	Income-tax rebate	:
Less standard deduction	: 30,000		
Income-tax on 1st Rs. 50,000	:	Recovered in December 2004	:
10% on	:	Recovered in January 2005	:
20% on	:	Recovered in February 2005	:
Total Tax Rs.			

Asstt. Manager (Admn.)

154. 3190749 SEPOY ANIL KUMAR, JAT/34 RASHTRIYA RIFLES

155. 3192978 SEPOY PRAVIN KUMAR, 9 JAT REGIMENT

156. 3398332 SEPOY SURJIT SINGH, SIKH/6 RASHTRIYA RIFLES

157. 3398722 SEPOY RANJIT SINGH, SIKH/16 RASHTRIYA RIFLES

158. 3401837 SEPOY ROOP SINGH, SIKH/16 RASHTRIYA RIFLES

159. 3402475 SEPOY RANJIT SINGH
SIKH/6 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

160. 3995704 SEPOY DESH RAJ, DOGRA/11 RASHTRIYA RIFLES

161. 3998284 SEPOY GULSHAN MEHTA, DOGRA/11 RASHTRIYA RIFLES

162. 4000643 SEPOY DAWINDER SINGH, DOGRA/11 RASHTRIYA RIFLES

163. 4195178 SEPOY HARISH CHANDRA KAPRI, 3 KUMAON (POSTHUMOUS)

164. 4365533 SEPOY ATHISII DAIKHO MAO, 6 ASSAM

165. 4366827 SEPOY MOALONG AO, 8 ASSAM

166. 4368275 SEPOY LETZATHANG, 10 ASSAM

167. 4477559 SEPOY RAMPAL SINGH
SIKH LIGHT INFANTRY/19 RASHTRIYA RIFLES

168. 4569833 SEPOY RAJINDER, MAHAR/1 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

169. 4571219 SEPOY LAKHWINDER SINGH, 14 MAHAR (POSTHUMOUS)

170. 4572860 SEPOY PRAVEEN KUMAR, 6 MAHAR REGIMENT (POSTHUMOUS)

171. 4572926 SEPOY RAMESH KUMAR, 6 MAHAR REGIMENT (POSTHUMOUS)

172. 9927096 SEPOY TASHI NAMGAIL, 3 LADAKH SCOUTS

173. 14925910 SEPOY JAI SING BORO
MECH INF/50 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

174. 13762652 RIFLEMAN SURAJ PARKASH, 15 JAMMU & KASHMIR RIFLES

175. 2201027 RIFLEMAN ARJUN BAHADUR CHHETRI, 22 ASSAM RIFLES

176. 2894421 RIFLEMAN BRAJESH SINGH
RAJPUTANA RIFLES/43 RASHTRIYA RIFLES (POSTHUMOUS)

177. 2895178 RIFLEMAN MANOJ KUMAR
RAJPUTANA RIFLES/18 RASHTRIYA RIFLES

178. 5755420 RIFLEMAN NIRMAL THAPA, 5/8 GORKHA RIFLES

179. 9098967 RIFLMAN BASHIR AHMED LONE
12 JAMMU & KASHMIR LIGHT INFANTRY (POSTHUMOUS)

180. 9099251 RIFLEMAN JASPAL SINGH
13 JAMMU & KASHMIR LIGHT INFANTRY (POSTHUMOUS)

181. 9107357 RIFLEMAN SWARN SINGH
11 JAMMU & KASHMIR LIGHT INFANTRY

182. 9423465 RIFLEMAN MOHAN THAPA, 3/11 GORKHA RIFLES

183. 13757057 RIFLEMAN RANJIT SINGH, 15 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

184. 13759740 RIFLEMAN SUBASH CHAND
JAMMU & KASHMIR RIFLES/3 RASHTRIYA RIFLES

185. 13759937 RIFLEMAN PARDEEP SINGH
JAMMU & KASHMIR RIFLES/31 RASHTRIYA RIFLES

186. 13762168 RIFLEMAN SANJAY KUMAR, 18 JAMMU AND KASHMIR RIFLES

187. 13762526 RIFLEMAN ANIL KUMAR
JAMMU & KASHMIR RIFLES/28 RASHTRIYA RIFLES

188. 1494948 SAPPER GURMAIL SINGH, ENGINEERS/36 RASHTRIYA RIFLES

189. 1584995 SAPPER VIJAY SANTOSH PATIL
ENGINEERS/47 RASHTRIYA RIFLES

190. 15564198 SAPPER RAJINDER SINGH, 113 ENGINEERS REGIMENT

191. 13623703 PARATROOPER PRADEEP KUMAR
PARA/31 RASHTRIYA RIFLES

192. 13623883 PARATROOPER NAHAR SINGH
10 PARA (SPECIAL FORCE) (POSTHUMOUS)

193. 13624159 PARATROOPER SUDESH, 10 PARA (SPECIAL FORCE)

194. 14427896 GUNNER BALAPPA MARED SANKAPPA
ARTILLERY/17 RASHTRIYA RIFLES

195. 14428971 GUNNER J MADHAVAN, ARTILLERY/28 RASHTRIYA RIFLES

196. 14429897 GUNNER GURTAR SINGH, ARTY/28 RASHTRIYA RIFLES

197. 15138674 GUNNER ABNESH KUMAR SHARMA
ARTILLERY/36 RASHTRIYA RIFLES

198. 15138970 GUNNER RAMNEEK KUMAR
ARTILLERY/17 RASHTRIYA RIFLES

199. 15152795 GUNNER VINAY KUMAR DWIVEDI
ARTILLERY/281 FIELD REGIMENT

200. 15397836 SIGNALMAN RAJEEV R NAIR, SIGNALS/10 RASHTRIYA RIFLES

No. 131–Pres/2004 - The President is pleased to approve the award of the **"Vayu Sena Medal/Air Force Medal"** to the undermentioned personnel for the acts of exceptional devotion of duty:-

1. WING COMMANDER MUKESH RAWAT (17453), FLYING (PILOT)

2. SQUADRON LEADER RAKSHALE SANJEEV KUMAR (18837)
AERONAUTICAL ENGINEERING (ELECTRONICS)

3. FLIGHT LIEUTENANT NAVIN MARANATHA NAYAR (24035)
FLYING (PILOT)

4. FLIGHT LIEUTENANT MAYANGLAMBAM MANIMOHON SINGH (24229)
FLYING (PILOT)

(BARUN MITRA)
DIRECTOR

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT
(DEPARTMENT OF SECONDARY & HIGHER EDUCATION)
UNESCO UNIT

New Delhi, the 27th October 2004

the 27th October, 2004

No. F. 27-25/2001-UU— RESOLUTION

In term of subsection (1) of Section 21 of chapter 111 of the Auroville Foundation Act, 1988, the Government of India hereby reconstitutes the Auroville International Advisory Council as follows:-

1. **Dr. A. T. Ariyaratne**
Foundation Chairman, Sarvodaya Samadhan Movement of Sri Lanka,
Mostuwa.
2. **Sir Mark Tully,**
1 (Ground Floor), Nizamuddin East,
New Delhi.
3. **Prof. Diana Eck**
Harvard University,
Harvard,USA.
4. **Mr. Doudou Diene,**
8, rue Leon Vaudoyer 75007,
Paris, France.
5. **Dr. Marc Luyckx Ghisi,**
Cellule de Prospective Europeen,
Sparrenweg,10,
B-3051 Sint Joris Weert,
Belgium.

2. The Chairman of the Council shall be elected by the members of the council from among themselves.

3. The term of office of the members shall be for a period of 4 years from the date of this Resolution. The members shall serve in an honorary capacity.

4. Secretary, Auroville Foundation would be the Ex-officio Secretary of the International Advisory Council.

5. The International Advisory Council, Auroville Foundation notified vide the Resolution of even number dated the 31st May, 2004 will be deemed to have been wound up with the issue of the present Resolution.

ORDER

Ordered that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

Ordered also that a copy of the Resolution may be sent to all the individuals, the Secretary, Auroville Foundation, Villupuram District, Auroville, Tamil Nadu and the Chief Secretary, Government of Tamil Nadu.

C. BALAKRISHNAN
Jt. Secy.

MINISTRY OF CIVIL AVIATION

New Delhi, the 28th October 2004

RESOLUTION

New Delhi, the 28th October, 2004

RESOLUTION

No. E.11011/4/2004-OL: The Government of India has decided to reconstitute the 'Nagar Vimanan Hindi Salahkar Samiti' for the Ministry of Civil Aviation. The composition of the Samiti and its functions etc. will be as under: -

1. **Composition**

Minister of Civil Aviation	Chairman

2. **OFFICIAL MEMBERS**

1.	Secretary, Civil Aviation	Member
2.	Secretary, Department of Official Language	Member
3.	Representative of Department of Official Language	Member
4.	Joint Secretary (F), Ministry of Civil Aviation	Member
5.	Joint Secretary (N), Ministry of Civil Aviation	Member
6.	Joint Secretary (M), Ministry of Civil Aviation	Member
7.	Joint Secretary (U), Ministry of Civil Aviation (If concerned Joint Secretary is not able to attend the meeting due to some unavoidable administrative reasons, the Director/Deputy Secretary working under him, will attend the meeting)	Member attend the rative rking
8.	Director General of Civil Aviation, New Delhi	Member
9.	Commissioner of Security, Civil Aviation, Bureau of Civil Aviation Security, New Delhi	member
10.	Chief Commissioner of Railway Safety, Commission of Railway Safety, Lucknow	Member
11.	Chairman cum Managing Director, Air India Ltd. Mumbai	Member
12.	Chairman cum Managing Director, Indian Airlines Ltd., New Delhi.	Member

13.	Chairman, Airports Authority of India, New Delhi	Member
14.	Managing Director, Alliance Air, New Delhi.	Member
15.	Managing Director, Hotel Corporation of India Ltd. Mumbai, Mumbai	Member
16.	Chairman cum Managing Director, Pawan Hans Helicopters Ltd. New Delhi.	Member
17.	Director, Indira Gandhi Rashtriya Uran Akademi Fursatganj, Distt. Raebareily, Uttar Pradesh	Member

NON OFFICIAL MEMBERS

Members of Parliament nominated by Ministry of Parliamentary Affairs

18.	Shri Ashwani Kumar, MP (Rajya Sabha)	Member
19.	Shri Ram Nath Kovind, MP (Rajya Sabha)	Member
20.	Shri Kunwar Jitin Prasad, MP (Lok Sabha)	Member
21.	Shri Ramakant Yadav, MP (Lok Sabha)	Member

Members of Parliament nominated by Committee of Parliament on Official Language

22.	Smt. Sarla Maheshwari, MP (Lok Sabha)	Member
23.	Kunwar Sarvraj Singh, MP (Lok Sabha)	Member

Member nomited by Kendriya Sachivalaya Hindi Parishad

24.	Dr. Krishan Kumar Grover, representative, Kendriya Sachivalaya Hindi Parishad, FB-16, Tagore Garden, New Delhi-110 092.	Member

Member Nominated by Akhil Bhartiya Voluntary Organisations

25.	Anant Ram Tripathi, Prime Minister, Rashtrabhasha Prachar Samita, Verdha 3A/2-3, Abhishek Apartments, Shastri Nagar Road Kalwa (West), Thane-400 605, Maharashtra	Member

Members nominated by Ministry of Civil Aviation

26.	Shri Shilesh Sharma, B-82, Sector 36, Noida 201301, Uttar Pradesh	Member
27.	Shri Anuj Gupta, Archana Niwas, House No. 88 Sector 6, Ghaziabad, Uttar Pradesh	Member

28. Dr. Kumud Sharma, F 9/G, DDA Flats Munirka, New Delhi-110 067. — Member
29. Shri Vivek Saxena, A-63, Pandara Road, New Delhi-110 003 — Member

Members nominated by Department of Official Language

30. Shri Hakim Anis-Ur-Rehman, 1516-18 David Street, First Floor, Pataudi House Darya Ganj, New Delhi. — Member
31. Dr. Shivgopal Mishr , Prime Minister, Vigyan Parishad Prayag, Maharishi Dayanand Marg Allahabad-211 002 — Member
32. Dr. Leela Jyoti, 409, Inderlok Complex Road No. 1, Banjara Hills, Hyderabad-500 034 — Member

Member Secretary

33. Director, Official Language, Ministry of Civil Aviation

FUNCTIONS OF THE SAMITI

The function of the Samiti is to render advice in regard to the implementation of the provisions relating to Official Language Hindi contained in the Constitution, Official Languages Act, and Rules, and Policy decisions of the Kendriya Hindi Samiti and instructions issued by the Ministry of Home Affairs/Department of Official Language relating to Official Language Hindi and also in regard to the Progressive use of Hindi in the Ministry of Civil Aviation/

TENURE

The tenure of the members of the Samiti shall ordinarily be three years from the date of its constitution provided that:

(a) A member, who is Member of Parliament, ceases to be a member of the Samiti as soon as he/she ceases to be a Member of Parliament.
(b) Ex-officio Member of the Samiti shall continue as members as long as they hold the office by virtue of which they are members of Samiti.
(c) If a vacancy arises in the Samiti due to resignation, death etc. of the member, the member appointed on the vacancy shall hold office for the residual term of three years.

ALLOWANCES

The non-official members of the Samiti will be paid traveling and daily allowance for attending the meetings of the Samiti at the rates fixed by the Government of India from time to time.

HEADQUARTERS

The headquarters of the Samiti shall be at New Delhi, but if considered necessary, it may hold its meetings at any other place also.

ORDER

Ordered that a copy of this resolution b communicated to all Members of the Samiti, all State Governments and Union Territory Administrations, Prime Minister's Office, Cabinet Secretariat, President's Secretariat, Committee of Parliament on Official Language, Comptroller and Auditor General, Accountant General, Central Revenues, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat and all the Ministries and Department of the Government of India.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

DR. NASIM ZAIDI
Jt. Secy.

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 2004
PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 2004